अंक 10

वर्ष 2019

टी.ई.सी.

संचारिका

वार्षिक गृह पत्रिका

दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र
आई.एस.ओ. 9001:2008
www.tec.gov.in

भारत सरकार
दूरसंचार विभाग
दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र
खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली-110001

शुभारंभ

हिन्दी पखवाड़ा 2018

संदेश

प्रिय पाठकों,

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र की हिंदी की गृह पत्रिका ''टी.ई.सी. संचारिका'' का दसवां अंक आपको सौंपते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका के प्रकाशन का एक दशक पूरा होने पर आप सभी बधाई के पात्र हैं।

हमारी भाषा में हमारी मिट्टी की सुगंध बसती है। भाषा हमारी संस्कृति की संवाहक, संचारक और संप्रेषक होती है। देश की सर्वांगीण उन्नति तथा अटूट एकता के लिए अपनी भाषा और संस्कृति ही सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। आज हिंदी राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा से आगे बढ़कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। इसमें आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

कम्प्यूटर और इन्टरनेट ने पिछले वर्षों में विश्व में सूचना क्रांति ला दी है। आज कोई भी भाषा कम्प्यूटर (तथा कम्प्यूटर सदृश अन्य उपकरण) से दूर रहकर लोगों से जुड़ी नहीं रह सकती। कम्प्यूटर के विकास के आरम्भिक काल में अंग्रेजी को छोड़कर विश्व की अन्य भाषाओं के कम्प्यूटर पर प्रयोग की दिशा में बहुत कम ध्यान दिया गया जिसके कारण सामान्य लोगों में यह गलत धारणा फैल गयी कि कम्प्यूटर अंग्रेजी के सिवाय किसी दूसरी भाषा (लिपि) में काम ही नहीं कर सकता। किन्तु यूनिकोड के पर्दापण के बाद स्थिति बहुत तेजी से बदल गयी। अब कोई भी कम्प्यूटर पर आसानी से हिंदी में काम कर सकता है। हमारे कार्यालय में पिछले एक वर्ष में हिंदी में कार्य काफी बढ़ा है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और उसमें सृजनात्मक अभिव्यक्ति हेतु गृह पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह पत्रिका हिंदी में लेखन एंव हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने की दिशा में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। सभी रचनाकारों एंव सहयोगीगणों को बधाई देता हूं और यह आशा करता हूं कि वे राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग हेतु भविष्य में भी अपना सहयोग एंव योगदान देते रहेंगे।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पाठकगण इस अंक को रोचक, उपयोगी, ज्ञानवर्धक एवं सुरूचिपूर्ण पाएंगे और पूर्व की तरह अपनी अमूल्य प्रतिक्रियाओं से अवश्य अवगत कराते रहेंगे।

(महाबीर प्रसाद सिंघल)
सलाहकार
दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र

संपादकीय

प्रिय साथियों,

"टी.ई.सी. संचारिका" का वर्तमान अंक अपने पाठकों को सौंपते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है । हिंदी गृह पत्रिकाएं जहां भाषा के उत्तरोतर विकास में अपना योगदान देती है, वहीं राजभाषा के प्रचार–प्रसार में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है ।

हिन्दी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। विश्व की प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ–साथ हिन्दी हमारी राजभाषा है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिन्दी भाषा को आसानी से बोल–समझ लेता है। यही इस भाषा की पहचान भी है कि इसे बोलने और समझने में किसी को कोई परेशानी नहीं होती। यह भारत की एकमात्र ऐसी भाषा है जिसमें पूरे देश में भावात्मक एकता स्थापित करने की पूर्ण क्षमता है। धीरे–धीरे हिन्दी भाषा का प्रचलन बढ़ा है और अब यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत पसंद की जाती है। अब देश के सभी नागरिकों को यह संकल्प लेने की आवश्यकता है कि वह हिंदी को सस्नेह अपनाकर और सभी कार्य क्षेत्रों में इसका अधिक से अधिक प्रयोग कर इसे व्यवहारिक रुप से राष्ट्रभाषा बनने का गौरव प्रदान करेंगे ।

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र एक तकनीकी संस्थान है और इसके बावजूद राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने हेतु सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं । इसमें अनेक प्रतिभाओं के लेख समाहित है । इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बल मिलेगा और अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा विकसित होगी । पत्रिका को आप तक पहुंचाने में सहायक सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हृदय से आभार प्रकट करता हूं ।

आशा है यह अंक भी आपको पसंद आएगा तथा इस पत्रिका को और अधिक मुखर बनाने के लिए आपकी प्रतिक्रिया एवं आपके बहुमूल्य सुझाव भी अवश्य प्राप्त होंगे ।

(राम लाल भारती)
उप महानिदेशक (एन.जी.एस.)
दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र

संरक्षक एवं मार्गदर्शक
श्री महाबीर प्रसाद सिंघल
सलाहकार, टी.ई.सी.

उप संरक्षक
श्रीमती नीलम सिंघल
उप महानिदेशक (पी. एंड टी.)

संपादक
श्री राम लाल भारती
उप महानिदेशक (एन.जी.एस.)

सह संपादक
श्री राजेन्द्र प्रसाद
निदेशक (एन.जी.एस.)

सहयोगी गण
डॉ. प्रीति बांझल
श्री वी. पी. अजनसोंडकर
श्री हर्ष शर्मा
श्री राजेश त्रिपाठी
श्री अमरदीप

:नोटः
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं।

विषय सूची

क्रम सं.	रचनाएं	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	सरस्वती वंदना		4
2	दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र		5
3	मास्टर साहब	अभय शंकर वर्मा	6
4	मधुमय नव–जीवन	अभय शंकर वर्मा	9
5	देशभक्त	राकेश बेदी	10
6	जिंदगी का सफरनामा	प्रवेन्द्र बघेल	11
7	कैशलेश ट्रान्जैक्शन	हर्ष शर्मा	12
8	मां	डॉ. शिवानी भण्डारी	16
9	साधू की झोपड़ी	आरती	18
10	जिंदगी के राहों की	प्रवीण कुमार	19
11	जिंदगी	अमन मिश्रा	19
12	जल संकट से जूझ रहा भारत	अवधेश सिंह	20
13	माँ	राजेश कुमार	24
14	भावनाएँ	आकांक्षा गुप्ता	24
15	संघर्ष	नीतू सिंह	25
16	वो दिन अच्छे थे	प्रेमजीत लाल	26
17	भगवान बचाएगा	चितरंजन	27
18	माँ	उषा अग्रवाल	28
19	पिता	नीतू सिंह	29
20	इच्छा	आकांक्षा गुप्ता	30
21	भोर का पहर है	आकांक्षा गुप्ता	30
22	मंजिल	अनसार	31
23	सुख	अभिषेक	32
24	कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप	अमर दीप	33
25	माँ बाप को भूलना नहीं	अनसार	36
26	जो धेनु आयी ना होती	उषा अग्रवाल	37
27	साया	सतविंदर सिंह	37
28	हिंदी पखवाड़े का आयोजन		38
29	हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएं		44
30	हिंदी कार्यशाला		45
31	संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा निरीक्षण		46
32	एम 2 एम/आई ओ टी एनैबलिंग स्मार्ट इफ्रास्ट्रक्चर पर एक संगोष्ठी का आयोजन		47
33	अनिवार्य जांच (मैन्डेटरी टेस्टिंग)		48
34	दूरसंचार विभाग की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक		49
35	राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान		50

सरस्वती वंदना

हे शारदे मां, हे शारदे मां
अज्ञानता से हमें तार दे मां...

तू स्वर की देवी है संगीत तुझसे
हर शब्द तेरा है हर गीत तुझसे
हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे
तेरी शरण हम, हमें प्यार दे मां...

हे शारदे मां, हे शारदे मां
अज्ञानता से हमें तार दे मां...

मुनियों ने समझी, गुणियों ने जानी
वेदों की भाषा, पुराणों की बानी
हम भी तो समझें, हम भी तो जाने
विद्या का हमको अधिकार दे मां...

हे शारदे मां, हे शारदे मां
अज्ञानता से हमें तार दे मां...

तु श्वेतवर्णी, कमल पे विराजे
हाथों में वीणा, मुकुट सर पे साजे
मन से हमारे मिटा दे अंधेरे
हमको उजालों का संसार दे मां...

हे शारदे मां, हे शारदे मां
अज्ञानता से हमें तार दे मां...

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र, भारत सरकार के संचार मंत्रालय के दूरसंचार विभाग से संबद्ध एक तकनीकी कार्यालय है जो दूरसंचार उत्पादों, उपकरणों, सेवाओं और नेटवर्क हेतु मानकों, सामान्य आवश्यकताओं, अंतराफलक (इंटरफेस) आवश्यकताओं, सेवा आवश्यकताओं और विनिर्देश (स्पेसिफिकैशन) बनाता है। इसके साथ दूरसंचार उत्पादों, उपकरणों और सिस्टम की टेस्टिंग और प्रमाणन (सर्टिफिकेशन) का कार्य भी इसके द्वारा किया जाता है। दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र का मुख्यालय नई दिल्ली में है और इसके चार क्षेत्रीय केंद्र नई दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और बंगलुरु में स्थित हैं।

लक्ष्य

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र, भारत को, दूरसंचार क्षेत्र में "उत्कृष्ट केंद्र" की छवि के आधार पर एशिया प्रशांत देशों के हित में, दूरसंचार मानक, विनिर्माण सहायता व नेटवर्क निर्माण कौशल को विकसित करते हुए इस क्षेत्र व व्यवसाय में "अग्रणी दूरसंचार ज्ञान एवं विनिर्माण केंद्र" के रूप में स्थापित करेगा।

मिशन

- वैश्विक विकास के साथ तालमेल रखने के लिए नए विनिर्देशों को विकसित करना और मौजूदा विनिर्देश अद्यतन करना ।
- स्टेट ऑफ आर्ट दूरसंचार प्रयोगशालाओं की स्थापना करना ।
- देश के हित के लिए व्यावसायिक निकायों जैसे आईटीयू, आईईटीएफ, एपीटी आदि से सक्रिय भागीदारी रखना।
- विशेष रूप से स्थानीय निर्माताओं के लिए दूरसंचार प्रौद्योगिकी के विकास हेतु, सी–डॉट के लिए तकनीकी मंजूरी।

टीईसी के मुख्य कार्य इस प्रकार हैं :

- दूरसंचार नेटवर्क, उपकरण सेवाओं और पारस्परिकता के संबंध में सामान्य मानकों के विनिर्देश तैयार करना ।
- वर्गीय आवश्यकताएँ (जीआर), इंटरफेस आवश्यकताएं (आईआर) और सेवा आवश्यकताएं (एसआर) आदि के रूप में विनिर्देश जारी करना ।
- इंटरफेस अनुमोदन, अनुमोदन सर्टिफिकेट, सर्विस अनुमोदन एवं टाइप अनुमोदन जारी करना ।
- मूलभूत तकनीकी योजनाओं और मानकों का संरूपण करना।
- मानकीकरण के लिए बहुपक्षीय एजेंसियों जैसे एपीटी, ईटीएसआई और आईटीयू आदि के साथ इण्टरैक्ट करना ।
- नवीनतम प्रौद्योगिकियों और अनुसंधान एवं विकास के परिणामों को आत्मसात करने के लिए विशेषज्ञता का विकास करना।
- दूरसंचार विभाग को तकनीकी सपोर्ट देना और ट्राई एवं टीडीसैट को तकनीकी सलाह देना ।
- दूरसंचार विभाग की नीति योजना के लिए, दूरसंचार क्षेत्र में तकनीकी विकास पर सी–डॉट के साथ समन्वय करना ।

मास्टर साहब

"मास्टर साहब ! हाँ, हाँ, शिवशंकर बाबू ! हेडमास्टर साहब !!! इस संसार में नहीं रहे ।" यह सुनते ही सारा इलाका सन्नाटे में पड़ जाता है– "अभी पिछले अगस्त महीने में ही अपने गाँव में सावनी पूजा के दौरान सभी से मिले थे। उस समय तो काफी स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त थे। क्या हो गया? कैसे हो गया? – लोग आपस में बात करने लगते हैं।"

शिवशंकर बाबू ग्राम बथना महोदत के सिरमौर, इलाके के मास्टर साहब। इलाके के सिरताज, कलयुग में गृहस्थ साधु। दोहरा बदन, गठीला शरीर, सामान्य से ऊँचा कद। शरीर पर शुभ्र वस्त्र। मुख पर विचित्र आभा। सरलता की सौम्य मूर्ति। देखकर कोई कभी कह नहीं सकता कि ये किसी हाई स्कूल के रोबदार हेडमास्टर हो सकते हैं।

शिवशंकर बाबू के पिता "भगवती बाबू" जब छोटे बच्चे थे, तभी उनके माता–पिता दोनों स्वर्ग सिधार गए। उनकी बड़ी बहन बनारसी देवी ने उन्हें पाला–पोसा। दरभंगा जिले में एक ग्राम है – हथौड़ी, हायाघाट स्टेशन के निकट। बनारसी देवी का घर हथौड़ी में ही है। उसी के पास खरारी मिडल स्कूल में ही पढ़े–लिखे। कुछ पुराने जमाने की बात है–मिडल गुरू ट्रेनिंग की। उसी विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हुए, जहाँ पढ़े–लिखे थे। किन्तु इनका शासन इतना कड़ा था कि जब भी प्रधानाध्यापक अनुपस्थित होते तो इन्हें ही इन्चार्ज बनाया जाता। इस समय कुछ ऐसा कार्य करते कि इनकी धाक और भी बढ़ जाती। शासन में कठोर होने के बावजूद बच्चों को ये पिता तुल्य स्नेह दिया करते थे।

भगवती बाबू तब मास्टर साहब के नाम से पुकारे जाते थे। उन्होंने स्वाध्याय द्वारा होम्योपैथिक चिकित्सा–शास्त्र की जानकारी प्राप्त कर मुजफ्फरपुर से होम्योपैथिक की डिग्री ले ली। तत्पश्चात स्कूल के साथ ही सुबह शाम होम्योपैथिक दवा का प्रयोग कर लोगों का इलाज करने लगे। रोगी देखते ही दवा का ऐसा चुनाव कर लेते कि रोगी को दवा रामबाण की तरह फायदा पहुँचाती। इलाके में इनकी ख्याति और बढ़ने लगी और कुछ आय भी होने लगी। कुछ दिनों तक तो यह क्रम जारी रहा, फिर यदा–कदा डॉक्टरी के कारण स्कूल जाने में देर होने लगी। पहले तो प्रधानाध्यापक ने कुछ नहीं कहा। बाद में दबी जबान से एकाध–बार टोक दिया। इस तरह जब उन्हें चिकित्सा कार्य से फुरसत की कमी होने लगी तो खुद समय पर विद्यालय न जा पाने का क्षोभ होने लगा। अंत में त्याग पत्र देकर, लगे स्वतंत्र रूप से चिकित्सा व्यवसाय करने।

भगवती बाबू ने अपने जमाने में नाम और यश तो कमाया ही, पैसा भी खूब अर्जित किया। उनके मृदुल स्वभाव से सभी प्रसन्न रहते। रोगियों का आधा रोग तो वे अपने विनम्र स्वभाव एवं व्यवहार से ही दूर कर देते। तदोपरांत अपने गाँव बथना महोदत लौटने पर डॉक्टरी में पूर्ण रूप से रम गए और डॉक्टर साहब के नाम से इलाके के लोगों में मशहूर हो हुए।

भगवती बाबू– उज्जवल धवल खादी वस्त्रधारी। सरल सीधा, स्वभाव से गऊ। दिन रात कर्म में लीन रहने वाले। दवा–दारू से लेकर घर–घर के झगड़े झंझट का निपटारा करने वाले। कभी राष्ट्रीय–दिवस मनाने में व्यस्त। कभी अष्टयाम–आयोजन में लगे हैं तो कभी लाखौरी महादेव की पूजा करवा रहे हैं। "मासी–मासी च संक्रान्तौ" पर सत्यनारायण भगवान की अपने घर पूजा करते हैं।

चार बजे भोर हुआ नहीं, मुर्गे ने बाँग दी नहीं कि उठकर बिछावन पर बैठ जाते हैं। उषाकाल में उनका स्वर सुनाई पड़ता है, – हरि ॐ !! हरि ॐ !! हरि ॐ !!

एक दिन अपनी आपबीती सुनाते है। किसी दिन सबेरे उठकर "हरि ॐ ! हरि ॐ" बोल रहे थे। तभी इनका नौकर "महरिआ" उठकर पूछ बैठता है– "मालिक क्यों उठा रहे हो इतने सबेरे!" महरिआ को लगता है कि मालिक उसको 'महरिओ, महरिओ' कहकर पुकार रहे हैं। हरि ॐ का उल्टा प्रभाव बड़ा ही मनोरंजक है।

सवेरे सूर्योदय के पूर्व एक लौटा ताजा पानी पीते हैं। तब कहीं जाते शौचादि नित्य कर्म को। मुँह हाथ धोते। सालों भर करूआ तेल (सरसों का तेल) मालिश करते शरीर पर। स्नान कर पूजा पर बैठते। चन्दन धूप, पुष्प, नैवेद्य सहित पूजा करते– शालिग्राम तथा रामकृष्ण कुलदेवता आदि की। गीता तथा रामायण दो मुख्यग्रंथों का स्वाध्याय इनका प्रतिदिन का नियम है। पूजनोपरान्त तांबे के पात्र से तुलसीदल जल अर्थात चरणामृत पान स्वयं करते तथा परिवार के सभी सदस्यों को कराते। साथ ही प्रसाद स्वरूप फल या मेवा–मिश्री स्वयं लेना तथा सबको देना भी नहीं भूलते।

पूजा–पाठ चरणामृत एवं प्रसाद वितरण के उपरान्त अपने बंगले में पर्दापण करते हैं। अपनी कुर्सी पर आ विराजते हैं। सामने चौड़ा टेबल लगा है। दवा का बॉक्स, कुछ किताबें तथा कलमदान में कलम सजा कर रखा है। रोगियों से घुल मिलकर बात करते। नब्ज देखते। कभी थर्मामीटर या आला (स्टेथेस्कोप) लगाते। फिर पुर्जा लिखते और दवा की पुडिया स्वयं बाँधते और अनुपान आदि बता कर रोगी को दवा देते।

स्फूर्ति इतनी है इनमें कि कुछ कहा नहीं जा सकता। अधवयस होने पर कहा करते – मुझ में जितना पानी है आजकल के नवयुवकों में भी कहाँ से आएगा। अक्सर कहा करते –

दिवस बनाया काम काज को,
रात बनायी सोने को।
भाँति–भाँति के कन्द मूल फल,
खाकर मोटे होने को।।

सचमुच ये रोटी–भात, फल–फूल, दूध–दही खाकर इतने स्वस्थ हैं। भोजन सिर्फ दो–जून, मांस–मछली, प्याज–लहसुन तो कभी छूते तक नहीं। मिर्च–मसाला भी बहुत कम व्यवहार करते हैं। कहा करते "सादा भोजन, उच्च विचार रखो"।

डॉ. साहब कभी बेकार नहीं बैठते। कभी दवा बाँट रहे है। कभी किसी झगड़े का निपटारा कर रहे हैं। कभी दवा की पुस्तक पढ़ने में मग्न हैं तो कभी वेद–पुराण, मनुस्मृति आदि पढ़ने में मग्न। काम इनकी मेहनत के भूत से सदा भागा फिरता।

डॉक्टर साहब के दस सन्तान हैं, पुत्र–पुत्रियों से भरा–पूरा घर। पौत्र–पौत्रियों आदि को लेकर पचास से ऊपर की सदस्य संख्या है। ऐसा परिवार है इनका जहां सरस्वती सदा सुखमय विचरण करती है, लक्ष्मी को ईर्ष्या करते हुए भी

सरस्वती का अनुसरण करना ही पड़ता है।

उन्हीं डॉक्टर साहब के द्वितीय पुत्र हैं– शिवशंकर बाबू उर्फ मास्टर साहब, बिलकुल अपने पिता की प्रतिमूर्ति।

सुबह सबेरे– ब्रहम मुहूर्त में उठकर ठाकुर जी का नाम–ध्यान करना, फिर नित्य कर्म से निवृत होकर ठाकुर जी की प्रार्थना और भजन। तत्पश्चात चरणामृत एवं प्रसाद स्वरूप फल या मेवा–मिश्री स्वयं लेना तथा सबको देना इनकी दिनचर्या का अहम हिस्सा है।

शिवशंकर बाबू ने अपने गाँव को आदर्श ग्राम बनाने की दिशा में बहुत प्रयास किया है। इन्होंने गाँव के नवयुवकों को संगठित कर सभा की एवं ग्राम सुधारक समिति बनाई। पुस्तकालय, वाचनालय, ग्राम रक्षादल आदि खोलने का प्रस्ताव स्वीकृत कराने में अहम भूमिका निभाई। इनकी ही पहल पर गाँव की पाठशाला को आदर्श विद्यालय में परिणत करने की योजना बनी। किसानों को उचित मूल्य पर खाद, बीज एवं अन्य कृषि संबंधी सामान मिले तथा आवश्यकतानुसार कृषि कार्य हेतु ऋण मिले, इसके लिए एक सहयोग समिति बनाई गई। यातायात की सुविधा हेतु ग्रामीण सड़कों एवं गलियों की सफाई एवं मरम्मत के लिए उप–समिति बनी। धीरे–धीरे सभी समितियाँ अपना–अपना कार्य करने लगती हैं और गाँव का कायाकल्प होने लगता है।

इसी बीच कुछ ईर्ष्यालुयों को यह सब नागवार गुजरता है। उनमें से कुछ लोग शिवशंकर बाबू के विरोध में लोगों के कान भरने लगते हैं। कोई कहता है – शिवशंकर बाबू यह सब अपना नाम कमाने के लिए करते है, हमलोग सहयोग क्यों दें? कुछ लोग कहते हैं– इसमें शिवशंकर बाबू को आर्थिक लाभ है, तभी तो दिन रात इन कार्यों में लगे रहते हैं। भला, जिस काम से इनका मुँह मीठा ना हो, वह काम ये क्यों करेंगे?

इस तरह जितने मुँह, उतनी बातें सुनी जाने लगती हैं। शिवशंकर बाबू इन अफवाहों की प्रवाह ना करते हुए निर्विकार एवं निर्लिप्त होकर सब काम करते और कराते जाते हैं। कुछ लोग शिवशंकर बाबू के विकास–कार्यों में टाँग अड़ाते रहते हैं, किन्तु अधिकांश लोग इनकी निस्वार्थ सेवा–भावना से परिचित हैं। वे लोग इनके कार्यों में पूरा–पूरा सहयोग देते हैं।

गाँव के पुस्तकालय के नए भवन के उद्घाटन के दौरान राज्य के मुख्यमंत्री, विधान सभाध्यक्ष आदि नेतागण समारोह में भाग लेने आते हैं। उस अवसर पर पुस्तकालय को खूब सजाया गया है। गाँव में चल रहे, अम्बर चरखे के प्रशिक्षण की झाँकी, हस्त उद्योग प्रदर्शनी आदि भी इस अवसर पर प्रस्तुत की गई है। गाँव के नवयुवकों द्वारा सांस्कृतिक–कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये जाते हैं। उद्घाटन समारोह के अवसर पर जब स्वागत–भाषण में शिवशंकर बाबू ग्राम–विकास संबंधी विविध योजनाओं की प्रगति का विवरण प्रस्तुत करते हैं तो आंगतुक सज्जन, मन्त्री एवं नेता काफी प्रभावित होते हैं।

अपने उद्घाटन भाषण में विधान सभाध्यक्ष कहते हैं–"भारत गाँवों का देश है। गाँवों के विकास से ही देश का विकास संभव है। आज इस गाँव के विकास कार्यों से हम लोग काफी प्रसन्न हैं। यदि शिवशंकर बाबू जैसे सामाजिक कार्यकर्ता हर गाँव में हो तो हमारे गाँव की समुचित उन्नति तो होगी ही, हम धरती पर स्वर्ग उतार ला सकते हैं।"

अपने अध्यक्षीय भाषण में मुख्यमंत्री शिवशंकर बाबू को ग्राम विकास कार्यों के लिए धन्यवाद देते हैं और सतत विकास कार्यों में सहयोग प्रदान करने का आश्वासन देते हैं।

इस समारोह के पश्चात शिवशंकर बाबू के विरोधी भी उनके साथ कंधे से कन्धा मिलाकर काम करना शुरू कर देते हैं। गाँव के सभी लोग इससे प्रेरणा लेकर अपना अधिक से अधिक समय सामाजिक कार्यों में लगाने लगते हैं। कालान्तर में मास्टर साहब न केवल ग्राम विकास बल्कि अन्य सामाजिक कार्यों में भी सतत प्रयासशील रहे एवं सभी को सत्संग के माध्यम से प्रेरित करते रहे। इनके कई छात्र समाज में प्रतिष्ठित पदों पर भी आसीन हैं। आज इनका गाँव एक आर्दश ग्राम की श्रेणी में आता हैं, जहां सभी भाईचारे के साथ खुशी–खुशी रह रहे हैं।

"कर्म ही जीवन है।" कर्तव्य ही सौंदर्य है। यह सब कहने वाले, मात्र कहने वाले ही नहीं, बल्कि कर्म में उतारने वाले मास्टर साहब अब नहीं रहे! किन्तु कौन कहता है – मास्टर साहब अब नहीं हैं? उनका नाम सदा सबके मुख पर रहता है। जिनका नाम अमर हो गया है, वे तो हैं ही। कितने लोगों को कर्म की शिक्षा देने वाले स्वयं सशरीर हमारे बीच नहीं हैं, यही तो संसार है। "कीर्ति यस्य स जीवति।" इसको चरितार्थ कर रहे हैं मास्टर साहब। उनका नाम अब भी प्रकाशित हो रहा है – चहुँ ओर मणि की आभा की भाँति ।

13

मधुमय नव–जीवन

मधुर मिलन की मधुर बेला में, लगता मधुमय यह संसार।
मधुर मास की मधुर निशा में, सचमुच मधुमय यह संसार।।

ज्येष्ठ मास के ग्रीष्मकाल में, छाया भी चाहती छाया।
मुझे मिली तेरी छाया, तूने पायी मेरी छाया।।

शर्मीली, कनिष्ठा, गुलाबी, अब ताजगी बनकर आई।
मधुर नवीन रूप में, मेरी सुंदर तरूणी आई।।

बहुत दिनों की मधुर कल्पना, आज हुई सचमुच साकार।
अपनी साधना और कल्पना, अब कर लो तुम भी साकार।।

इस नवयुग में जन–जीवन में, क्या रूप भर देना है।
आओ जीवनसाथी ! युग को, नये रंग में रंग देना है।।

अभय शंकर वर्मा
उप महानिदेशक (एम टी)

देशभक्त

आज मेरे भारत को एक सच्चा देशभक्त चाहिए,
मेरा राष्ट्र पतनोन्मुख हो रहा, विश्व में प्रमुख स्थान खो रहा
भ्रष्टाचार व गरीबी को हटाने वाला बलशाली, निडर, कर्मयोगी चाहिए
आज मेरे भारत को एक सच्चा देशभक्त चाहिए ।।

स्वार्थी नेताओं से हटकर, लोकहित भाव रखने वाला, सच्चा भारत का सपूत चाहिए
भारतीयों के आत्म सम्मान को, जो जगा सके, ऐसा एक शूरवीर चाहिए
आज मेरे भारत को एक सच्चा देशभक्त चाहिए ।।

राष्ट्र संपति की रक्षा जो करे और करवा सके, ऐसा एक देश प्रेमी चाहिए
देश की उन्नति में, स्वार्थ से उठकर, राष्ट्र हितेषी चाहिए
आज मेरे भारत को एक सच्चा देशभक्त चाहिए ।।

भारत में फैली अशिक्षा, गरीबी, अज्ञानता को दूर करने वाला
एक भारत का सिरमौर चाहिए, देश पर मिटने वाला दिवाना चाहिए
आज मेरे भारत को एक सच्चा देशभक्त चाहिए ।।

निंदा, चुगली व द्वेष भाव से हटकर, सब में जो प्रेम का बीज डाल सके
धर्म में हो निष्ठा जिसकी, नारियों को गौरवमय सम्मान दिला सके
आज मेरे भारत को एक सच्चा देशभक्त चाहिए ।।

दुखियों व गरीबों के दुख समझने वाला, साफ दिल इंसान चाहिए
सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों में,
देशभक्ति का संचार पैदा कर सके, ऐसा राष्ट्रप्रेमी नेता चाहिए
आज मेरे भारत को एक सच्चा देशभक्त चाहिए।।

झूठे, पाखंडी गुरूओं व शिक्षकों का यथायोग्य तिरस्कार चाहिए
आज छात्रों में कालुष्य भावों को मिटाने वाला, अनुशासन सिखाने वाला,
सात्विक प्रवृति वाला, उत्तम गुरू चाहिए
आज मेरे भारत को एक सच्चा देशभक्त चाहिए।

आज बुझते ज्ञान के दीपक को, हम सबने मिलकर पुनः जलाना है
राष्ट्र में फैले अंधविश्वास, अंधकार को ज्ञान रूपी प्रकाश से मिटाना है
आज भारत को उसका खोया विश्व गुरू का सम्मान दिलाना है
यह प्रयास कराने वाला एक सच्चा शूरवीर नेता चाहिए

आज मेरे भारत को एक सच्चा देशभक्त चाहिए।।
आज मेरे भारत को एक सच्चा देशभक्त चाहिए।।

"जय भारत"

राकेश बेदी
सलाहकार (आईटी)

जिंदगी का सफरनामा

सफर में धूप तो होगी जो चल सको तो चलो
सभी हैं भीड़ में तुम भी निकल सको तो चलो

किसी के वास्ते राहें कहां बदलती है
तुम अपने आप को खुद ही बदल सको तो चलो

यहां किसी को कोई रास्ता नहीं देता
मुझे गिरा के अगर तुम संभल सको तो चलो

कहीं नहीं कोई सूरज धुआँ–धुँआ है फजा
खुद अपने आप से बाहर निकल सको तो चलो

यही है जिंदगी कुछ ख्वाब चंद उम्मीदें
इन्हीं खिलौनों से तुम भी बहल सको तो चलो

प्रवेन्द्र बघेल
एम.टी.एस.(पी&टी)

कैशलेश ट्रान्जैक्शन

भारत सरकार लोगों को कैशलेस अर्थव्यवस्था की तरफ प्रोत्साहित कर रही है। कैशलैस अर्थव्यवस्था को तभी पाया जा सकता है जब अर्थव्यस्था में धीरे–धीरे कैश को कम किया जाए और सभी लेन–देन इलेक्ट्रॉनिक माध्यम जैसे प्रत्यक्ष डेबिट, क्रेडिट और डेबिट कार्ड, इलेक्ट्रॉनिक क्लिरिंग और भुगतान प्रणाली जैसे तत्काल भुगतान सेवा (आईएमपीएस), राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर (एनईएफटी) और रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट (आरटीजीएस) से इस्तेमाल किया जाए। अब लोग ऑनलाइन पेमेंट (Online Payment), डेबिट कार्ड (Debit Card), क्रेडिट कार्ड (Credit Card), रुपेकार्ड (RupayCard), ई–वालेट (E-Wallet) और विभिन्न प्रकार के मोबाइल एप (जैसे Paytm, Freecharge) का सहारा ले रहे हैं ऐसे में अब इन सभी साधनों का उपयोग कैसे करते है, इसे जानना जरुरी हो जाता है।

"अब हमें बटुए रखने की जरूरत नहीं है, अब हमारा मोबाइल ही हमारा बैंक ब्रांच बन चूका है और इसका उपयोग करना सभी नौजवान अपने आस–पास के लोगों को भी सिखाये"–नरेंद्र मोदी।

कैशलेश पेमेंट करने के तरीके :–

1. बैंकिंग कार्ड (डेबिट क्रेडिट / अन्य) / स्वाइप मशीन (पी ओ एस मशीन)

Banking Cards (Debit/Credit/Others) / Swipe Machine (POS Machine)

भारत में ऑनलाइन पेमेंट में डेबिट कार्ड (Debit Card) और क्रेडिट कार्ड (Credit Card) का बहुत बड़ा सहयोग है। पहले आम आदमी डेबिट कार्ड का उपयोग बस एटीएम मशीन से पैसे निकलने में किया करता था और रिचार्ज में भी इससे मदद मिलती थी। आजकल हर बैंक द्वारा डेबिट कार्ड दिया जाता है जिसका उपयोग हम कैशलेश पेमेंट के रूप में भी कर सकते है। हम जब भी कहीं ऑनलाइन पेमेंट करते हैं तो इसके लिए हमें सिर्फ डेबिट कार्ड और इसका पासवर्ड याद रखना होता है और जब भी कहीं हम शॉपिंग करते हैं तो वहां लगी स्वाइप मशीनों के द्वारा हम अपना पेमेंट खुद कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त डेबिट कार्ड का उपयोग अपने घर बैठे ऑनलाइन पेमेंट जैसे बिजली, डिश टीवी रीचार्ज, मोबाइल रीचार्ज, ऑनलाइन शॉपिंग और अन्य सभी भुगतान के रूप में जो ऑनलाइन पेमेंट लेते है, उनमें कर सकते हैं।

पी ओ एस मशीन (कार्ड स्वाइप मशीन) एक छोटी मशीन होती है जिसमें कस्टमर को अपना डेबिट कार्ड और एटीएम, क्रेडिट कार्ड को स्वाइप करना होता है और पिन नंबर डालकर ऑनलाइन पेमेंट कर दिया जाता है।

2. अनस्ट्रक्चर्ड सप्लीमेंट्री सर्विस डाटा (यूएसएसडी) Unstructured Supplementary Service Data (USSD)

टेक्नोलॉजी ने मोबाइल बैंकिंग और इन्टरनेट बैंकिंग जैसी सुविधाओं के जरिये बैंकों को आपके हाथों तक पहुंचा दिया है। अब आप मोबाइल से ही पैसे भेज सकते हैं और बैंक बैलेंस जान सकते हैं। मोबाइल बैंकिंग को और आसान

बनाने के लिए भारत सरकार ने USSD Banking नाम से एक नयी सुविधा शुरू की है। यह बैंकिंग सुविधा मोबाइल फोन में *99# डायल करके प्रयोग की जा सकती है इसीलिए इसे *99# Banking कहते हैं। यूएसएसडी बैंकिंग का फायदा आप साधारण फोन से भी ले सकते हैं। दरअसल USSD Banking सुविधा उन लोगों को ध्यान में रखकर शुरू की गयी है जिनके पास या तो स्मार्टफोन नहीं है या वो इन्टरनेट का प्रयोग नहीं करते। इस तरह से देश में अधिकतर लोग मोबाइल बैंकिंग सुविधा से जुड़ सकेंगे।

यूएसएसडी (USSD) क्या है ?

यूएसएसडी (USSD) एक प्रकार की सुविधा है जिससे आप सीधे टेलीकॉम कंपनी के कम्प्यूटर से जुड़ जाते हैं। आजकल दुकानदार मोबाइल रिचार्ज इसी तरीके से करते हैं। मोबाइल का बैलेंस भी इसी तरीके से तुरंत पता चल जाता है। यूएसएसडी सुविधा का प्रयोग करने के लिए आपको अपने फोन पर एक विशेष कोड डायल करना पडता है। इस कोड की शुरुआत में *(स्टार) तथा अंत में # (हैश) का चिह्न होता है। अलग–अलग सुविधाओं के लिए अलग अलग USSD Codes होते हैं।

*99# USSD कोड बैंकिंग सुविधाओं के लिए एक विशेष कोड है। अन्य यूएसएसडी कोड की तरह यह सिर्फ टेलिकॉम कंपनी के सर्वर से ही नहीं बल्कि बैंक के सर्वर से भी जुड़ता है। ये सीधे आपको अपने खाते से जोड़कर आसानी से लेनदेन की सुविधा देता है। यह तरीका आपके खाते से जुड़ने के लिए आपके मोबाइल नंबर का प्रयोग करता है। इसलिए यह आवश्यक है कि आपका मोबाइल नंबर आपके खाते से जुड़ा हो। अगर ऐसा नहीं है तो *99# बैंकिंग का लाभ उठाने के लिए आपको अपने मोबाइल नंबर को खाते से जोड़ना होगा। *99# बैंकिंग कोड सभी बैंकों में काम करता है और इससे एक बैंक के खाते से दूसरे बैंक के खाते में पैसे भेजे जा सकते हैं। इसके अलावा बैलेंस जानकारी और मिनी स्टेटमेंट देखने जैसी और भी कई सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं । इस सेवा को NPCI (भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम) मैनेज करती है।

- अपने रजिस्टर्ड नंबर से *99# डायल करें।
- अगली स्क्रीन पर अपने बैंक का तीन अक्षरों वाला नाम डालें और भेज दें। उदाहरण के लिए भारतीय स्टेट बैंक के ग्राहक SBI लिखेंगे। बैंक के नाम की जगह पर आप अपने बैंक के आईएफएससी कोड के शुरुआती चार अक्षर या फिर बैंक के संख्या कोड के शुरुआती दो अक्षर भी लिख सकते हैं ।
- अगली स्क्रीन पर आपके सामने एक सूची दिखेगी जिसमें सभी उपलब्ध सेवाएं लिखी होंगी। हर सेवा के आगे एक अंक लिखा होगा।

3. आधार इनेबल्ड पेमेंट सिस्टम (एईपीएस) AADHAR Enbled Payment System (AEPS)

सरकार ने आधार इनेबल्ड पेमेंट सिस्टम (एईपीएस) की शुरूआत की है। इस सेवा से सीधे एक आधार संबद्ध खाते से दूसरे आधार संबद्ध बैंक खाते में पैसों का ट्रांसफर हो जाएगा। यहां डेबिट कार्ड की कोई जरूरत नहीं होगी। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, देश के एक अरब से ज्यादा लोगों के पास अब आधार कार्ड है। कैशलेस ट्रांजैक्शन को प्रोत्साहित करने के लिए केंद्र सरकार ने एक एप लॉन्च किया है। इसके जरिए ग्राहक अपनी आधार संख्या और

फिंगरप्रिंट के जरिए दुकानदारों को भुगतान कर सकेंगे ।

4. यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) Unified Payment Interface (UPI)

यूपीआई यानी यूनीफाइड पेमेंट इंटरफेस (Unified Payment Interface) पैसे भेजने का एक सिस्टम है। अभी तक एनईएफटी, आरटीजीएस और आईएमपीएस सिस्टम के जरिए पैसा भेजा जाता रहा है। यूपीआई इनसे ज्यादा एडवांस तरीका है। इस पेमेंट सिस्टम को इस तरह से बनाया गया है कि आम लोग भी इसे आसानी से इस्तेमाल कर सकें।

यूनीफाइड पेमेंट इंटरफेस सिस्टम मोबाइल एप पर आधारित है। यानी ये इंटरनेट इस्तेमाल करने वाले स्मार्टफोन में काम करता है। यूपीआई को इस्तेमाल करने के लिए इंटरनेट से जुड़ा होना जरूरी है। फिलहाल यूपीआई एप एंड्राएड ऑपरेटिंग सिस्टम के लिए बनाया गया है। आपको पता ही होगा कि दुनिया के 80% फोन एन्ड्रॉएड ऑपरेटिंग सिस्टम इस्तेमाल करते हैं। भविष्य में यूपीआई आईफोन और विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम में भी काम करेगा।

यूपीआई पेमेंट सिस्टम आपके मोबाइल नंबर के जरिए आपके खाते की जानकारी लेता है। मोबाइल नंबर के जरिए ये पक्का करता है कि आप अपने ही खाते से जुड़ें। इसका मतलब ये भी है कि अगर आपने बैंक में अपना नम्बर नहीं दिया है तो यूपीआई का फायदा नहीं ले पाएंगे। इतना ही नहीं अगर आप अपने स्मार्टफोन से अपना सिम निकाल लेंगे तो भी ये एप काम नहीं करेगा। यूपीआई के जरिए आप देश में किसी भी बैंक खाते में पैसे भेज सकते है। ऐसा नहीं है कि अगर आप स्टेट बैंक के ग्राहक हैं तो सिर्फ स्टेट बैंक के ग्राहकों को ही पैसे भेज पाएंगे। बल्कि किसी भी बैंक के ग्राहक को पैसे भेज सकते हैं।

यूपीआई एक पेमेंट सिस्टम है और इसे किसी भी एप का हिस्सा बनाया जा सकता है। इसके बनाने वाली एजेंसी NPCI (National Payment Corporation) यूपीआई प्लेटफॉर्म का लाइसेंस देती है। बैंकों को ही यूपीआई सिस्टम का इस्तेमाल करने की इजाजत मिलती है। लेकिन बैंक चाहें तो अपने नाम पर कुछ और लोगों को यूपीआई का इस्तेमाल करने दे सकते हैं। कुछ बैंक यूपीआई प्लेटफॉर्म वाला नया एप लेकर आए हैं, जैसे ICICI बैंक ने अपने पुराने एप iMobile में ही यूपीआई को मिला लिया है। वहीं एसबीआई ने नया एप एसबीआई पे (SBI Pay) लॉन्च

किया है। गूगल प्लेस्टोर में अगर आप यूपीआई सर्च करेंगे तो आपको कई यूपीआई एप मिल जाएंगे।

5. मोबाइल वालेट / ई–वालेट (Mobile Wallets/E-wallet)

पहले लोग वॉलेट यानि बटुए को अपने पॉकेट में रखते थे लेकिन आजकल इसी बटुए को अब मोबाइल में भी रख सकते है जिसे ई–वालेट कहते हैं। इसके लिए हमारे पास खुद का एक बैंक अकाउंट होना जरुरी है और अपने बैंक अकाउंट के साथ अगर इंटरनेट बैंकिंग का प्रयोग करते है तो हमारे लिए और भी अच्छा है।

ई–वालेट के लिए हमारे पास एक स्मार्टफोन के साथ उसमें नेट कनेक्टिविटी यानि इंटरनेट की सुविधा भी होना जरुरी है जो आजकल लगभग सभी युवाओं के पास होता है। अपने मोबाइल के Play store में जाकर हमें SBI Buddy, Paytm, Freecharge, Mowikwik, Novapay, Payumoney, जैसे एप डाउनलोड कर सकते हैं जिनके द्वारा इनमें से किसी एप को सक्रिय करने के बाद हमारा मोबाइल एक चलता फिरता बैंक या ई–वालेट के रूप में तैयार हो जाता है।

6. इंटरनेट बैंकिंग (Internet Banking)

यदि आपको किसी को पैसे भेजने है तो आप इलेक्ट्रोनिकली पैसे को ट्रांसफर कर सकते हो। ऑनलाइन पैसे ट्रांसफर करने के तीन तरीके हैं।

क) पहला तरीका है एनईएफटी (NEFT) यानि नैशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर : – इससे एक बैंक खाते से दूसरे बैंक खाते में पैसे ट्रांसफर कर सकते हैं। एनईएफटी द्वारा पैसा बैंक के कार्य–समय के दौरान ट्रांसफर होता है । एनईएफटी से पैसा भेजने की अधिकतम कोई सीमा नहीं है।

ख) दूसरा तरीका है आरटीजीएस (RTGS) यानी रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट :– आरटीजीएस का इस्तेमाल अधिक पैसे ट्रांसफर करने के लिए होता है। इसमें 2,00,000 रूपए तुरंत ट्रांसफर हो जाते हैं और यह सर्विस 24 घंटे और सातों दिन के लिए उपलब्ध हैं।

ग) तीसरा तरीका है आई एम पी एस (IMPS) यानी ईमीडिएट पेमेंट सर्विस :– इससे अधिकतम 2,00,000 रूपए ट्रांसफर किए जा सकते हैं और बैंक का पेमेंट ट्रांसफर शुल्क अलग होता है।

संकलनकर्ता
हर्ष शर्मा
सहायक महानिदेशक (एन.जी.एस.)

मां

"एक अलौकिक स्पर्श"

प्रेम को साकार होने का दिल हुआ
और "मां" का आविर्भाव हुआ।

जो मस्ती आंखों में है, मदिरालय में नहीं
अमीरी इस दिल की सी, किसी बड़े महालय में नहीं
शीतलता पाने को, कहां भटकता है मानव
जो है "मां" की गोद में, वो हिमालय में नहीं।

मां और दया, दोनों नेक हैं
क्योंकि माफ करने में, दोनों एक हैं।

दूध हो तो गाय का, फूल हो तो जाई का
जोड़ नहीं जिसका कोई, प्यार तो है वो माई का।

जीवन के अंधेरे पक्षों में, सूरज की रोशनी सा, होता है जिसका आना
उस "मां" की जिन्दगी में, हे मानव! तू कभी अंधकार ना फैलाना।

जन्म दे तुझे उसने माना, अपनी सबसे अनमोल दौलत
आज तू जो कुछ भी है, सिर्फ उसी "मां" की बदौलत।

"मां"! संसार तेरे ही दम से बना है, बड़े–बड़े तीर्थकारों को तूने ही जना है
तू मेरी पूजा है, मन्नत है मेरी, तेरे ही कदमों में जन्नत है मेरी।

सोचा नहीं जाता – "मां" बिना घर या घर बिना माता
दोनों में ही छिपी है, संसार की बडी करूणता।

पहले आंखों में अश्रु आते ही, याद तेरी आ जाती थी
आज तेरी याद में, सूनी–सूनी इन आखों में, सिर्फ आंसू ही रह जाते हैं।

उपर जिसका अंत नहीं, उसे आसमां कहते हैं
संसार में जिसका अंत नहीं, उसको ''मां'' हम कहते हैं।

जिसे कोई उपमा न दी जा सके, उसका नाम है "मां"
जिसकी कोई सीमा नहीं, उसका नाम है "मां"।

जिसके प्रेम को पतझड़ स्पर्श न करे, उसका नाम है "मां"
ऐसी तीन "मां" हैं – परमात्मा, महात्मा, और "मां"।

हे युवक, प्रभु को पाने की पहली सीढी "मां" है
जो तलहटी की अवगणना करे वो शिखर को
प्राप्त करे, यह शक्य नहीं।
ऐसी "मां" की अवगणना करके, हजारों माला गिनकर
हम प्रभु को प्राप्त करें, यह बात बहुत ही दूर है।

"मां" पूर्ण शब्द है, ग्रंथ है, महाविद्यालय है, यह बीज मंत्र है
हर सृजनता का प्रभार है "मां"
मंत्र, तंत्र व यंत्र से बडा सफलता का आधार है "मां"।

याद रखना–"मां" को जानने वाला ही महात्मा को जान सकता है
"मां" को जानने वाला ही परमात्मा को जान सकता है।
रे..... महात्मा व परमात्मा भी वही बन सकता है
जो "मां" को पहचान सकता है।

"मां"
"मां" चिन्ता है, याद है, हिचकी है
"मां" बच्चे की चोट पर सिसकी है।
"मां" चूल्हा, धुंआ, रोटी और हाथों का छाला है
"मां" जिन्दगी की कड़वाहट में अमृत का प्याला है।
"मां" त्याग है, तपस्या है, सेवा है
"मां" फूंक से ठण्डा किया हुआ कलेवा है।

डॉ. शिवानी भण्डारी
सुपुत्री श्री सुधीर भण्डारी
उप महानिदेशक (एस)

साधू की झोपड़ी

किसी गाँव में दो साधू रहते थे। वे दिन भर भीख मांगते और मंदिर में पूजा करते थे। एक दिन गाँव में आंधी आ गयी और बहुत जोरों की बारिश हाने लगी; दोनों साधू गाँव की सीमा से लगी एक झोपड़ी में निवास करते थे। शाम को जब दोनों वापस पहुंचे तो देखा कि आँधी–तूफान के कारण उनकी आधी झोपड़ी टूट गई है। यह देखकर पहला साधू क्रोधित हो उठता है और बुदबुदाने लगता है, " भगवान! तू मेरे साथ हमेशा ही गलत करता है....मैं दिनभर तेरा नाम लेता हूँ। मंदिर में तेरी पूजा करता हूँ फिर भी तूने मेरी झोपड़ी तोड़ दी। गाँव में चोर – लूटेरे, झूठे लोगों के मकानों को तो कुछ नहीं हुआ। हम बेचारे साधूओं की झोपड़ी तूने तोड़ दी, ये तेरा ही काम है। हम तेरा नाम जपते हैं पर तू हमसे प्रेम नहीं करता।"

तभी दूसरा साधू आता है और झोपड़ी को देखकर खुश हो जाता है, नाचने लगता है और कहता है, भगवान्! आज विश्वास हो गया है कि तू हमसे कितना प्रेम करता है। ये हमारी आधी झोपड़ी तूने ही बचाई होगी वरना इतनी तेज आंधी–तूफान में तो पूरी झोपड़ी ही उड़ जाती। ये तेरी ही कृपा है कि अभी भी हमारे पास सिर ढकने की जगह है। निश्चित ही ये मेरी पूजा का फल है, कल से मैं तेरी और पूजा करूँगा, मेरा तुझपर विश्वास और बढ़ गया है.... तेरी जय हो।

मित्रों, एक ही घटना को एक ही जैसे दो लोगों ने कितने अलग–अलग ढंग से देखा। हमारी सोच हमारा भविष्य तय करती है, हमारी दुनिया तभी बदलेगी जब हमारी सोच बदलेगी। यदि हमारी सोच पहले साधू की तरह होगी तो हमें हर चीज में कमी ही नजर आएगी और अगर दूसरे साधू की तरह होगी तो हमें हर चीज में अच्छाई दिखेगी। अतः हमें दूसरे साधू की तरह विकट से विकट परिस्थति में भी अपनी सोच सकारात्मक बनाये रखनी चाहिए।

आरती
एम.टी.एस.

जिंदगी के राहों की

मन–दीपक निष्कंप जलो रे!
सागर की उत्तल तरंगें
आसमान को छू–छू जाएँ
डोल उठे डगमग भुंमडल
अग्निमुखी ज्वाला बरसाये
धुमकेतु बिजली की धुति से,
धरती का अंतर हिल जाए
फिर भी तुम जहरीले फन को
कालजयी बन उसे ढलो रे

कदम–कदम पर पत्थर, काँटे,
पैरों को छलनी कर जाएँ
श्रान्त–कलान्त करने को आतुर
क्षण–क्षण में जग की बाधाएँ
मरण–गीत आकर गा जाएँ
दिवस–रात आपद़–विपदाएँ
फिर भी तुम हिमपात–तपन में
बिना आह चुपचाप चलो रे!

प्रवीण कुमार
एम.टी.एस. (प्रशासन)

जिंदगी

ग़र तुम न हो, तो बड़ी आसान है जिंदगी...
दो वक्त की रोटी और सांस लेने का नाम है
जिंदगी...

गम और खुशी से बे़खबर,
सुकूं की नींद न होकर!
बस काम–काम–काम है जिंदगी,
ग़र तुम न हो, तो बड़ी आसान है जिंदगी...!!

ये उम्मीदों के पुलिंदे, तुमसे ही तो बंधते है,
ये सपनों के धागे, हम मिलकर ही तो बुनते हैं!
तुम आदत बड़ी खराब हो जिंदगी,
तुम बिन बड़ी आसान है जिंदगी!!

ये जो करने मरने के किस्से हैं,
बस हमारे ही तो हिस्से है!
गर, मैं–मैं बनूं और तुम–तुम,
तो बड़ी आराम है जिंदगी!!

तुम बिन बड़ी आसान है जिंदगी!
तुम बिन बड़ी आराम है जिंदगी!!

अमन मिश्रा
कार्यालय सहायक(प्रशासन)
अनुबंधित

जल संकट से जूझ रहा भारत

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून। पानी गये न ऊबरे, मोती, मानुष, चून।।...ये कुछ बेहद प्रचलित पंक्तियां हैं जो पानी के महत्व का वर्णन सरलतम रूप में करती हैं। लेकिन बात जब जल संकट की आती है तो सबसे अधिक हैरानी इस बात पर होती है कि जब पृथ्वी के समस्त भूभाग का दो–तिहाई से भी अधिक भाग जल से अच्छादित है तो फिर इस धरातल पर रहने वालों के लिए समय के साथ यह दुलर्भ क्यों होता जा रहा है। दरअसल, पृथ्वी के लगभग 71 प्रतिशत भूभाग पर फैले जल का केवल 3 प्रतिशत भाग पीने के लायक है। ताजे पेयजल का दो–तिहाई से भी अधिक भाग ग्लेशियरों में है। इसके बाद मात्र 1 प्रतिशत पानी विश्व की लगभग आठ अरब आबादी के दैनिक उपयोग के लिये शेष बचता है। अब यदि 71 प्रतिशत जल से घिरे भूभाग में केवल 1 प्रतिशत पानी मानव की पहुंच में हो और प्रयोग के लिए उपलब्ध हो तो दुनिया में जल संकट की गंभीरता का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है। दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देशों–भारत और चीन की आबादी को यदि एक साथ मिला दें तो दुनिया की लगभग तीन अरब आबादी साल में कम से कम दो से तीन महीने गंभीर जल संकट का सामना करने के लिए विवश है।

हमारे देश में भूजल स्तर गिर रहा है और हम दुनिया के उन देशों की सूची में सबसे ऊपर हैं, जो भूजल का ज़्यादा दोहन करते हैं। 22 मार्च को विश्व जल दिवस के मौके पर ब्रिटेन के एक अंतर्राष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठन 'वॉटर एड' ने अपनी नवीनतम रिपोर्ट में दावा किया है कि भारत में एक अरब की आबादी पानी की कमी वाले स्थानों में रह रही है और इनमें से 60 करोड़ लोग अत्यधिक कमी वाले इलाके में रहते हैं। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि जल स्रोतों की बढ़ती मांग के चलते भूजल के अत्यधिक दोहन, पर्यावरण और जनसंख्या में बदलाव के चलते ऐसा हुआ है। वैश्विक भूजल की कमी वर्ष 2000 से 2010 के बीच बढकर करीब 22 प्रतिशत हो गई है, लेकिन इसी अवधि में भारत में भूजल की कमी 23 प्रतिशत हो गई। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि भारत सबसे अधिक भूमिगत जल का उपयोग करता है। विश्व के कुल भूजल का 24 प्रतिशत भारत इस्तेमाल करता है।

यूनिसेफ सर्वे और विश्व स्वास्थ्य संगठन के आकड़े

यूनिसेफ के अनुसार, भारत में राजधानी दिल्ली और बेंगलुरू जैसे महानगर जिस तरह जल संकट का सामना कर रहे हैं, उसे देखते हुए यह अनुमान लगाया जा रहा है कि 2030 तक इन नगरों में भूजल का भंडार पूरी तरह से खत्म हो जाएगा।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के मुताबिक, पिछले सात दशकों में विश्व की आबादी दोगुनी से भी अधिक हो गयी

है और उसी के साथ पेयजल की उपलब्धता और लोगों तक इसकी पहुँच लगातार कम होती जा रही है। इसकी वजह से दुनिया भर से स्वच्छता की स्थिति भी प्रभावित हुई है। अशुद्ध पेयजल से डायरिया, हैजा, टाइफाइड और जलजनित बीमारियों का खतरा तेजी से बढ़ रहा है। दुनिया में लगभग 90 प्रतिशत बीमारियों का कारण गंदा और दूषित पेयजल है।

नीति आयोग का समग्र जल प्रबंधन सूचकांक

हाल ही के नीति आयोग के एक नवीनतम सर्वे के अनुसार भी, भारत में 60 करोड़ लोग गभीर जल संकट का सामना कर रहे हैं। अपर्याप्त और प्रदूषित जल के इस्तेमाल की वजह से भारत में हर साल दो लाख लोगों की मौत हो जाती है।

इससे पहले जून 2018 में नीति आयोग ने जल के महत्व को ध्यान में रखते हुए समग्र जल प्रबंधन सूचकांक पर एक रिपोर्ट तैयार की थी। समग्र जल प्रबंधन सूचकांक जल संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन में राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के प्रदर्शन के आकलन और उनमें सुधार लाने का एक प्रमुख साधन है। यह सूचकांक राज्यों और संबंधित केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों को उपयोगी सूचना उपलब्ध करा रहा है जिससे वे अच्छी रणनीति बना सकेंगे और जल संसाधनों के बेहतर प्रबंधन में उसे लागू कर सकेंगे। साथ ही एक वेब पोर्टल भी इसके लिए लॉन्च किया गया है। समग्र जल प्रबंधन सूचकांक में भूजल, जल निकायों की पुर्नस्थापना, सिचाई, खेती के तरीके, पेयजल, नीति और प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं के 28 विभिन्न संकेतकों के साथ 9 विस्तृत क्षेत्र शामिल हैं। समीक्षा के उद्देश्य से राज्यों को दो विशेष समूहों–'पूर्वोत्तर एवं हिमालयी राज्यों और अन्य राज्यों' में बाँटा गया है।

मानव निर्मित है जल संकट

इस सच्चाई से इनकार नहीं किया जा सकता कि पृथ्वी पर रहने वालों के लिए भूमंडलीय तापन के बाद जल संकट दूसरी सबसे बड़ी गंभीर चुनौती है। भारत में कुल वैश्विक आबादी का 18 प्रतिशत निवास करता है, लेकिन इसे विश्व में उपलब्ध पेयजल का 4 प्रतिशत ही मिल पाता है। यदि ध्यान से देखा जाए तो पता चलता है कि अन्य प्राकृतिक और मानवीय संकटों की तरह जल संकट भी मानव निर्मित है। इसके साथ उपलब्ध जल के दोषपूर्ण प्रबंधन के कारण जल संकट और गंभीर हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार की तलाश में आबादी के शहरों की ओर पलायन ने शहरी क्षेत्रों में जल संकट को और बढ़ाया है। हमारे देश में कृषि क्षेत्र में समस्त उपलब्ध जल का 70 प्रतिशत उपयोग होता है, लेकिन इसका केवल 10 प्रतिशत ही सही तरीके से इस्तेमाल हो पाता है और शेष 60 प्रतिशत बर्बाद हो जाता है। इसलिए हमें गहराई से जल प्रबंधन पर विचार करने की जरूरत है।

चीन में जल प्रबंधन के लिए 'रिवर चीफ' कार्यक्रम

चीन में जल प्रबंधन को लेकर एक कहावत प्रचलित है....**पानी को नौ ड्रैगन संभालते हैं।** अर्थात जल संसाधनों को संभालने में जुटी एजेंसियों के दायित्व एवं जिम्मेदारियाँ एक–दूसरे से जुड़ी हैं। ऐसा ही कुछ भारत में भी जल प्रबंधन को लेकर देखने को मिलता है। इस हालात का मुकाबला करने के लिए चीन ने पिछले साल एक गैर–परंपरागत लेकिन महत्वाकांक्षी कार्यक्रम रिवर चीफ शुरू किया।

'रिवर चीफ्स' कार्यक्रम की कार्य पद्धति

इस कार्यक्रम में एक सरकारी अधिकारी को नदी का मुखिया नियुक्त किया जाता है जो अपने इलाके में मौजूद जलाशय या नदी के खास हिस्से में पानी की गुणवत्ता संकेतकों का प्रबंधन करता है। उनका प्रदर्शन और भावी करियर इस बात पर निर्भर करता है कि वे अपने कार्यकाल में जल गुणवत्ता संकेतकों को सुधारने में कितने सफल हुए। चीन में नदियों एवं जलाशयों की गुणवत्ता पर नज़र रखने के लिए 4 लाख से अधिक रिवर चीफ नियुक्त किये गए। इनके अलावा ग्रामीण स्तर पर 7.6 लाख और लोगों को नदियों की देखरेख का जिम्मा दिया गया। इस तरह पूरे चीन में नदियों के पानी की हालात सुधरने के काम में 10 लाख से अधिक लोग लगाए गए। चीन में 'रिवर चीफ्स' कार्यक्रम का हिस्सा बनने का मतलब है कि स्थानीय अधिकारियों को अपने–अपने क्षेत्र में दिखाए गए पर्यावरण प्रदर्शन के लिये आजीवन जवाबदेही का सामना करना पड़ेगा। नदी के जिस हिस्से के लिए उस अधिकारी को नियुक्त किया गया है वहाँ पर उसके नाम के साथ संपर्क ब्योरा भी अंकित होता है। अगर स्थानीय लोग किसी व्यक्ति या कंपनी को उस नदी खंड में कूड़ा–करकट डालते हुए देख लेते हैं या वहाँ पर काई आदि जम रही है तो वो उस अधिकारी को फोन पर इसकी जानकारी देते हैं। नदी के अहम एवं बड़े हिस्से का दायित्व अधिक वरिष्ठ अधिकारी को दिया गया है। इससे अधिकारी तमाम विभागों को एक साथ काम करने के लिए जोड़ सकता है। रिवर चीफ्स प्रणाली अपनाने से चीन के च्यांग्सु प्रांत में मनुष्यों के पीने लायक सतही जल का अनुपात 35 प्रतिशत से बढ़कर 63 प्रतिशत हो गया।

भारत में क्या है स्थिति?

हमारी समस्याएँ भी काफी हद तक चीन जैसी ही है, लेकिन क्या ऐसी कोई व्यवस्था भारत में कारगर हो पाएगी? हमारे देश में जल प्रदूषण की अधिकता के अलावा जल प्रबंधन से जुडे कार्यों का जिम्मा कई संगठनों एवं सरकारी विभागों को सौंपा गया है। देश में जल प्रदूषण से निपटने के लिए पहले से कई कानून लागू हैं तथा केंद्र एवं राज्य दोनों स्तरों पर प्रदूषण मानकों के क्रियान्वयन के लिए प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड बने हुए हैं। राज्यों के स्तर पर गठित प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के पास तो जुर्माना लगाने की शक्ति पहले से ही है, लेकिन शीर्ष स्तर पर राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव है। इसमें कोई दो राय नही कि किसी भी योजना के क्रियान्यवन में राज्यों की भूमिका अहम होती है। किसी भी व्यक्ति को प्रदूषण मानकों का उल्लंघन करने पर तभी दंडित किया जा सकता है जब राज्य सरकार ऐसा करना चाहे, चाहे भारत में रिवर चीफ्स जैसे कार्यक्रम लागू हों या नहीं। वैसे जल को प्रदूषित करने वालों पर जुर्माना लगाने की राजनीतिक इच्छाशक्ति सुनिश्चित करने का सबसे प्रभावित तरीका यही है कि स्थानीय समुदायों को इसका जिम्मा दिया जाए और उन्हें जल प्रबंधन का प्रभारी बना दिया जाए। लंबे समय से भारत की पर्यावरण नीति टॉप–डाउन मोड से संचलित होती रही है और उसके नतीजे सबके सामने हैं। इसकी जगह बॉटम–अप मोड अपनाने की ज़रूरत है जिसमें ज़रूरी सुधारों की पहल सर्वाधिक प्रभावित लोग ही करें।

भारत में प्रभावी जल प्रबंधन की ज़रूरत

इजराइल के मुकाबले भारत में जल की पर्याप्त उपलब्धता है, लेकिन वहां का जल प्रबंधन हमसे कहीं अधिक बेहतर है। इजराइल में खेती, उद्योग, सिंचाई आदि कार्यों में पुनर्चक्रित पानी का इस्तेमाल होता है, इसीलिए वहां लोगों को

पेयजल की कमी का सामना नहीं करना पड़ता। भारत में 80 प्रतिशत आबादी की पानी की जरूरत भूजल से पूरी होती है और यह भूजल अधिकांशतः प्रदूषित होता है। ऐसे में बेहतर जल प्रबंधन से जल संकट से उबरा जा सकता है और जल संरक्षण भी किया जा सकता है।

भारत में पानी की बचत कम और बर्बादी अधिक होती है और इसकी वजह से होने वाले जल संकट का एक बड़ा कारण आबादी का बढ़ता दबाव, प्रकृति से छेड़छाड़ और कुप्रबंधन भी है। अनियमित मानसून इस जल संकट को और बढ़ा देता है। इस संकट ने जल संरक्षण के लिए कई राज्यों की सरकारों को परंपरागत तरीकों को अपनाने के लिए मजबूर कर दिया है। देशभर में छोटे–छोटे बांधों के निर्माण और तालाब बनाने की पहल की गई है। इससे पेयजल और सिंचाई की समस्या पर काबू पाया जा सका है। लेकिन भारत में 30 प्रतिशत से अधिक आबादी शहरों में रहती है। आवास और शहरी विकास मंत्रालय के आँकड़े बताते हैं कि देश के लगभग 200 शहरों में जल और बेकार पड़े पानी के उचित प्रबंधन की ओर तत्काल ध्यान देने की ज़रूरत है। जल संसाधन मंत्रालय का भी यही मानना है कि पेयजल प्रबंधन की चुनौतियाँ लगातार बढ़ती जा रही है। कृषि, नगर निकायों और पर्यावरणीय उपयोग के लिए मांग, गुणवत्तापूर्ण जल और आपूर्ति के बीच जल संसाधन का कुशल समन्वय समय की मांग हैं।

जल प्रदूषण से बचाव में हमारी भूमिका

जल प्रदूषण की रोकथाम हेतु सबसे आवश्यक बात यह है कि हमें जल प्रदूषण को बढ़ावा देने वाली प्रक्रियाओं पर ही रोक लगा देनी चाहिए। इसके तहत किसी भी प्रकार के अपशिष्ट या अपशिष्ट युक्त बहिःस्त्राव को जलस्त्रोतों में मिलने नहीं दिया जाना चाहिए। घरों से निकलने वाले खनिज जल एवं वाहित मल को एकत्रित कर संशोधन संयन्त्रों में पूर्ण उपचार के बाद ही जल स्त्रोतों में विसर्जित किया जाना चाहिए। पेयजल के स्त्रोतों (जैसे – तालाब, नदी आदि) के चारों तरफ दीवार बनाकर विभिन्न प्रकार की गंदगी के प्रवेश को रोका जाना चाहिए। जलाशयों के आस–पास गंदगी करने, उनमें नहाने, कपड़े धोने आदि पर भी रोक थाम लगानी चाहिए।

नदी एवं तालाब में पशुओं को स्नान कराने पर भी पाबंदी होनी चाहिए। उदयोगों को सैद्दान्तिक रूप से जल स्त्रोतों के निकट स्थापित नहीं होने देना चाहिए। इसके अतिरिक्त पहले से ही जलस्त्रोत के निकट स्थापित उद्योगों को अपने अपशिष्ट जल का उपचार किए बिना जल स्त्रोतों में विसर्जित करने से रोका जाना चाहिए।

कृषि कार्यों में आवश्यकता से अधिक उर्वरकों एवं कीटनाश्कों के प्रयोग को भी कम किया जाना चाहिए। जहां रोक लगाना संभव ना हो, वहां इनका प्रयोग नियंत्रित ढंग से किया जाना चाहिए। समय–समय पर प्रदूषित जलाशयों में उपस्थित अनावश्यक जलीय पौधों एवं जल में एकत्रित कीचड़ को निकालकर जल को स्वच्छ बनाए रखने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए।

जन–साधारण के बीच जल प्रदूषण के कारणों, दुष्प्रभावों एवं रोकथाम की विधियों के बारे में जागरूकता बढ़ानी चाहिए, ताकि जल का उपयोग करने वाले लोग जल को कम से कम प्रदूषित करें या प्रदूषित ना करें तथा संरक्षण करें।

अवधेश सिंह
सहायक महानिदेशक (एफ.ए.)

माँ

हे सुबह–सुबह की प्यारी किरणें
मन को तुम सब भांति हो।
माता के चंचल आँचल में
तुम क्यों शरमा जाती हो।।

जान से ओ प्यारी माता
तुझको याद मैं करता हूँ।
दिन रात की भागदौड में
तेरा काम मैं करता हूँ।।

अमन चैन की बांसुरी को
पता नहीं क्या हो गया।
लेकिन तुम माता हो
तुमको तो पता होगा ना।।

कोमल तेरा आँचल है
और मृदु तेरी भाषा।
हे माता अब दर्शन दे दो,
समझ कुछ नहीं आता।।

यादों में माँ की तस्वीरें
लेकर बैठे थे हम रास्ते में।
एक जनाब यूं ही पूछ बैठा
क्या लेके बैठे हो इस बस्ते में।।

मन में जवाब आया
लेकिन मुस्करा दिए हम।
आँखों के आसुओं को
यू ही पचा गए है।।

राजेश कुमार
आशुलिपिक (प्रशासन)

भावनाएँ

जो लिखती हूँ मैं वो क्या कोई पढ़ता है,
और पढ़ा तो क्या समझता है?
सुना है जो पढ़ने में अच्छा लगता है और आंनद देता है,
वही पढ़ा और समझा जाता है।
पर हर एक लिखी हुई बात को,
हर एक पढ़ने वाला नहीं समझ सकता।

"क्योंकि" लिखने वाला "भावनाएँ" लिखता है,
और लोग शब्द पढ़ते हैं।

आकांक्षा गुप्ता
कार्यालय सहायक (वित्त अनुभाग)
(अनुबंधित)

संघर्ष

दोस्तों मैं आपके साथ एक ऐसी कहानी शेयर करने जा रही हूँ जो बताती है कि व्यक्ति के जीवन में संघर्ष बहुत मायने रखता है। बिना संघर्ष के पायी हुई वस्तुओं में ज्यादा खुशी नहीं मिलती, जितनी कड़ा संघर्ष करने के बाद मिलती है। ये कहानी बताती है कि भगवान ने संघर्ष को प्राणी जीवन में इसलिए इतना महत्वपूर्ण बनाया है ताकि प्राणी कठिन परिस्थितियों का सफलतापूर्वक सामना करके जीवन में और निखार ला सके। बिना मेहनत और संघर्ष के प्राणी जीवन अपंग के समान हो सकता है और अगर सही समय पर जीवन में संघर्ष न किया गया तो शेष जीवन निरर्थक बन सकता है। ये कहानी है एक तितली की। तितली की कोकून से निकलने की प्रक्रिया अति संघर्षपूर्ण होती है। अगर वह बिना संघर्ष किये ही कोकून से बाहर आ जाए तो उसे शेष जीवन अपंग के रूप में बिताना पढ़ता है क्योंकि कोकून से निकलने के दौरान वह बहुत संघर्ष करती है जिससे उसके शरीर में मौजूद तरल उसके पंखों तक पहुँच पाता है, जिससे वह उड़ पाती है।

एक दिन की बात है जब एक आदमी बाग में घूम रहा था। वहीं उसे तितली का कोकून दिखाई पढ़ता है, तब से वह आदमी रोज उस कोकून को देखता है। एक दिन वह देखता है कि उस कोकून में एक छोटा सा छेद बन गया है। वह कोकून के पास बैठ जाता है और उसे ध्यान से देखता रहता है। कुछ देर बाद वह देखता है कि तितली उस छेद से बाहर आने का प्रयास कर रही है। कई देर तक प्रयास करने के बाद भी वह उस छेद से बाहर नहीं आ पा रही थी और बिलकुल शांत हो गयी थी। उसने सोचा कि तितली ने हार मान ली है। अतः उसने सोचा कि वह उसकी कुछ मदद कर दे। उसने एक कैंची से उस कोकून के छेद को थोड़ा और बड़ा कर दिया तथा तितली उसमें से बाहर निकल आई। पर उसने देखा कि उसका शरीर सूजा हुआ है और पंख सूखे हुए हैं। आदमी ने सोचा कि तितली उड़ेगी पर ऐसा ना हो सका। दरअसल वह बिना संघर्ष के ही उस कोकून से बाहर निकल आई जिससे उसके शरीर का तरल उस तक नहीं पहुँच सका और वह अपंग हो गयी।

प्राणी के जीवन में संघर्ष का बहुत महत्व है। बिना संघर्ष के वह उड़ना नहीं सीख पाएगा, कहने का मतलब है कि अगर वह कुछ पाने के लिए मेहनत और संघर्ष नहीं करेगा तो वह बेकार हो जाएगा और कठिन परिस्थितयों का सामना नहीं कर पाएगा। कई बार हम किसी की मदद कर उस इंसान को उसकी काबिलियत को पहचानने और उसे मेहनत करके कुछ सीखने से वंचित कर देते हैं जिससे उसे विकसित होने में कठिनाई आती है। अतः हमें यह याद रखना चाहिए कि कई बार हमें जरूरत होती है कठिन परिस्थितियों की ताकि हम संघर्ष कर अपने को उन्नत और विकसित बना सके।

नीतू सिंह
कार्यालय सहायक (आर)
(अनुबंधित)

वो दिन अच्छे थे

परवान चढ़ रहा था अपना इश्क़
जब तलक ना थी उसको मुश्क
माना हुनर–ए–इश्क़ में बच्चे थे
वो दिन अच्छे थे।।

ख़्यालों में करते थे बात
ख़्वाबों में होती थी मुलाक़ात
गोया हिम्मत के थोड़े कच्चे थे
वो दिन अच्छे थे।।

चर्चे अभी आम ना हुए थे
बद थे बदनाम ना हुए थे
पर अरमान दिल के सच्चे थे
वो दिन अच्छे थे।।

चाहत की कली ताजी खिली थी
काँटों भरी हक़ीक़त अभी ना मिली थी
खट्टे सही, पर अंगूर के गुच्छे थे
वो दिन अच्छे थे।।

गुफ़्तगू के मौके ताकते थे
ज़िक्र आये तो कन्नी काटते थे
एकतरफ़ा सही, मासूक तो पक्के थे
वो दिन अच्छे थे।।

जुनून–ए–इश्क़ की वहशत सी थी
अंदेशा–ए–इंकार की दहशत सी थी
चुनाचे, हसीन गफलत के गच्चे थे
वो दिन अच्छे थे।।

आँगन में मेहताब की जुर्रत कर बैठे
खोने की फ़िक्र में पाने की हसरत कर बैठे
सिले थे, पर लबों पे प्यार के फ़लसफ़े थे
वो दिन अच्छे थे।।

इज़हारें–मोहब्बत ही हिज्र का सबब हो गया
ख़त्म से ही शुरू, सिलसिला ये अजब हो गया
मसलन 'प्रेम' नाकामयाब सही, आशिक तो सच्चे थे
वो दिन अच्छे थे।।

प्रेमजीत लाल
निदशक (एस)

भगवान बचाएगा

एक समय की बात है किसी गाँव में एक साधू रहता था। वह भगवान का बहुत बड़ा भक्त था और निरंतर एक पेड़ के नीचे बैठकर तपस्या किया करता था। उसका भगवान पर अटूट विश्वास था और गाँव वाले भी उसकी इज्जत करते थे। एक बार गाँव में बहुत भीषण बाढ़ आ गई। चारों तरफ पानी ही पानी दिखाई देने लगा। सभी लोग अपनी जान बचाने के लिए ऊँचे स्थानों की तरफ बढ़ने लगे। जब लोगों ने देखा कि साधू महाराज अभी भी पेड़ के नीचे बैठे भगवान का नाम जप रहे हैं तो उन्हें यह जगह छोड़ने की सलाह दी। पर साधू ने कहा –

"तुम लोग अपनी बचाओ, मुझे तो मेरा भगवान बचाएगा!"

धीरे–धीरे पानी का स्तर बढ़ता गया और पानी साधू की कमर तक आ पहुंचा। इतने में वहां से एक नाव गुजरी।

मल्लाह ने कहा – "हे साधू महाराज, आप इस नाव पर सवार हो जाइए, मैं आपको सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दूंगा।"

"नहीं, मुझे तुम्हारी मदद की आवश्यकता नहीं है, मुझे तो मेरा भगवान बचाएगा!!", साधु ने उत्तर दिया।

नाव वाला चुपचाप वहां से चला गया।

कुछ देर बाद बाढ़ और प्रचंड हो गयी, साधु ने पेड़ पर चढ़ना उचित समझा और वहां बैठकर ईश्वर को याद करने लगा। तभी अचानक उन्हें गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दी, एक हेलिकॉप्टर उनकी मदद के लिए आ पहुँचा। बचाव दल ने एक रस्सी लटकाई और साधु को उसे जोर से पकड़ने का आग्रह किया।

पर साधु फिर बोला– "मैं इसे नहीं पकडूँगा, मुझे तो मेरा भगवान बचाएगा।"

उनके हठ के आगे बचाव दल भी उन्हें लिए बगैर वहां से चला गया।

कुछ ही देर में पेड़ बाढ़ की धारा में बह गया और साधु की मृत्यु हो गयी।

मरने के बाद साधू महाराज स्वर्ग पहुँचे और भगवान से बोले – " हे प्रभु, मैंने तुम्हारी पूरी लगन के साथ आराधना की.. .... तपस्या की पर जब मैं पानी में डूब कर मर रहा था तब तुम मुझे बचाने नहीं आये, ऐसा क्यों प्रभू? भगवान बोले, "हे साधु महात्मा, मैं तुम्हारी रक्षा करने एक नहीं बल्कि तीन बार आया। पहला ग्रामीणों के रूप में, किन्तु तुम मेरे इन अवसरों को पहचान नहीं पाए।"

मित्रों, इस जीवन में ईश्वर हमें कई अवसर देता है। इन अवसरों की प्रकृति कुछ ऐसी होती है कि वे किसी की प्रतीक्षा नहीं करते है। वे एक दौड़ते हुए घोड़े के समान होते हैं जो हमारे सामने से तेजी से गुजरते हैं, यदि हम उन्हें पहचान कर उनका लाभ उठा लेते हैं तो वे हमें हमारी मंजिल तक पहुँचा देते हैं, अन्यथा हमें बाद में पछताना पड़ता है।

चितरंजन
एम.टी.एस.

माँ

माता तेरी करूण कथा को, मैं कैसे लिख पाऊँगी।
धरती सब कागज कर दूँ, पर तेरा अंत न पाऊँगी।।
ममता की मूरत थी माता मेरी और करूणा की धारा थी।
आँचल में वात्सल्य प्रेम की, बहती अविरल धारा थी।।
आँखें में निश्चल प्रेम, हृदय से दया का सागर थी।।
चरणों से अशीष की गंगा, बहती निर्मल धारा थी।।
वाणी से असीम प्रेम की लहरें आती जाती थी।
कभी किसी का आहित ना करना, प्रतिदिन पाठ पढ़ाती थी।।
तेरी कृपा से ही है जननी, नूतन शरीर को पाया था।
ममता के आँचल में पलकर, फूली नहीं समायी थी।।
घुटनों के बल चल–चलकर तेरे समीप जब आती थी।
अमृत सुधा का पान कराती, परमानन्द को पाती थी।
तेरी ममता का अपार ऋण, मैं कैसे कभी चुकाऊँगी।
तुम संसार को छोड़ चली हो, कहाँ सहारा पाऊँगी।।
तेरा जाना यूँ लगता है, जैसे सब कुछ एक सपना था।
यर्थाथ बदल सकता ही नहीं, यह सच तो निश्चित घटना थी।।
तेरे जाने से हे जननी, संसार अधूरा लगता है।
हृदय विषाद से तपता है, घर आँगन सूना लगता है।।
माता किसे पुकारू कह कर, माँ का अब नहीं सहारा है।
माता तेरी प्रेम सरिता का, जग में कहां किनारा हैं।।
तेरी बगियों की शोभा क्या, सब तुम बिन सूना लगता है।
माता विहीन पुत्री को जग क्या, त्रिलोक भी सूना लगता है।।
माता तेरे चरणों में, श्रद्धा सुमन चढ़ाऊँ मैं।
दो ऐसा वरदान हे जननी, जग में नाम कमाऊँ मैं।।

उषा अग्रवाल
दूरभाष सुपरवाइजर
(वित्त अनुभाग)

पिता

कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता
कभी धरती तो कभी आसमान है पिता
जन्म दिया है अगर माँ ने
जानेगा जिससे जग वो पहचान है पिता...

कभी कंधे पे बिठाकर मेला दिखाता है पिता
कभी बनके घोड़ा घुमाता है पिता
माँ अगर पैरों पे चलना सिखाती है
तो पैरा पे खड़ा होना सिखाता है पिता..

कभी रोटी तो कभी पानी है पिता
कभी बुढ़ापा तो कभी जवानी है पिता
माँ अगर है मासूम सी लोरी
तो कभी ना भूल पाउंगी वो कहानी है पिता..

कभी हंसी तो कभी अनुशासन है पिता
कभी मौन तो कभी भाषण है पिता
माँ अगर घर में रसोई है
तो चलता है जिससे घर वो राशन है पिता..

कभी ख़्वाब को पूरी करने की जिम्मेदारी है पिता
कभी आंसुओं में छुपी लाचारी है पिता
माँ गर बेच सकती है जरूरत पे गहने
तो जो अपने को बेच दे वो व्यापारी है पिता..

कभी हंसी और खुशी का मेला है पिता
कभी कितना तन्हा और अकेला है पिता
माँ तो कह देती है अपने दिल की बात
सब कुछ समेट के आसमान सा फैला है पिता..

नीतू सिंह
कार्यालय सहायक(आर)
अनुबंधित

इच्छा

समय–समय की बात थी, इच्छा सामान्य थी।
जंगलों में यहां–वहां, ढूढते थे कहां–कहां।।

ज्ञान को मानते थे, अज्ञान को नहीं जानते थे।
पर आज कुछ ऐसा है, इच्छा के बल पर मनुष्य ढूंढता पैसा है।।

पैसे से लिपटी ये दुनिया, ज्ञान से दूर है।
पर हम ये नहीं समझते और अज्ञान को खरीदते हैं।।

इस अज्ञान की आहूति का, कौन लेगा नाम आज
अज्ञान से घिरी इस दुनिया का, कौन करेगा काम आज?

भोर का पहर है

यह भोर का पहर है, यह भोर का पहर है।
कोई ख्वाब जग रहा है, नित नित्य उठ रहा है।
कई पुष्प खिल रहें हैं, भौंरों के गुंजनो से ये धरा भी जग रही है।
यह भोर का पहर है, यह भोर का पहर है।

वातावरण नया है और दिन भी अब नया है।
ओ कर्म पथ के राही, राहें बुला रही हैं।
नव नियुक्त रवि किरणें, रास्ता दिखा रही हैं।
यह भोर का पहर है, यह भोर का पहर है।

आकांक्षा गुप्ता
कार्यालय सहायक (वित्त अनुभाग)
(अनुबंधित)

मंजिल

जीवन के इस पड़ाव पर
उम्र के इस बहाव में
कितने सारे प्रश्नों के उत्तर नहीं पाता हूँ....
अनजानी–बेगानी राहों पर
मैं, बस चलता जाता हूँ
मैं, बस चलता जाता हूँ

कुछ अनसुलझे हालात लिए
जिंदगी से कुछ सौगात लिए
कुछ अनकहे अलफाज लिए
कुछ बिगड़े हुए सुर लिए
कुछ बिगड़े हुए साज लिए
कुछ टूटे–बिखरे ख्वाब लिए
कुछ अन–समझे–अधूरे जज्बात लिए
मिला न मुझको अंजाम
उस अंजाम का आगाज लिए
मैं, बस चलता ही गया
मैं, बस चलता ही गया

अपनी मंजिल को ढूंढने
अपने सपनों को हकीकत में पीरोने
टूटे हुए सपनों को जोड़ने
जिंदगी के अधूरेपन को भरने
अपने टूटे हुए सपनों को जोड़ने
मैं, बस चलता ही गया
मैं, बस चलता ही गया

अकेले–अनजान राहों पर
सुनसान राहों पर
अनकहे–अनसुलझे पहलू को सुलझाने
अपनी मंजिल को पाने
चलता ही गया, चलता ही गया

आज भी मुझे चाहत है
अपने सपनों की
मुझे जरूरत है मेरे अपनों की
आज भी मैं जा रहा हूँ
अपने सपनों की खोज में
अपने अपनों की खोज में
ना जाने किस मोड़ पर अपने मिल जाएं
न जाने किस मोड़ पर
मेरे सारे सपने पूरे हो जाएं

आज भी मैं जी रहा हूँ
अपने सपनों को हकीकत में
पीरोने की कोशिश कर रहा हूँ
मंजिल मिले न मिले, कोशिश कर रहा हूँ
मैं, बस चल रहा हूँ

अनसार
एम.टी.एस
(अनुबंधित)

सुख

ऐ "सुख" तू कहाँ मिलता है
क्या तेरा कोई पक्का पता है!!

क्यों बन बैठा है अनजाना
अखिर कहां है तेरा ठिकाना!!

कहाँ कहाँ ढूंढा तुझको
पर तू कहीं न मिला मुझको!!

ढूंढा ऊँचे मकानों में
बड़ी बड़ी दुकानों में!!

स्वादिष्ट पकवानों में
चोटी के धनवानों में!!

वो भी तुझको ही ढूंढ रहे थे
बल्कि मुझको ही पूछ रहे थे!!

क्या आपको कुछ पता है
ये सुख आखिर कहाँ रहता है!!

मेरे पास तो "दुख" का पता था
जो सुबह शाम अक्सर मिलता था!!

परेशान होके शिकायत लिखवाई
पर ये कोशिश भी काम न आई!!

उम्र अब ढलान पे है
हौसला अब थकान पे है!!

हाँ उसकी तस्वीर है मेरे पास
अब भी बची हुई है आस!!

मैं भी हार नहीं मानूंगा
सुख के रहस्य को जानूंगा!!

बचपन में मिला करता था
मेरे साथ रहा करता था!!

पर जबसे मैं बड़ा हो गया
मेरा सुख मुझसे जुदा हो गया!!

मैं फिर भी नहीं हुआ हताश
जारी रखी उसकी तलाश!!

एक दिन जब आवाज ये आई
क्या मुझको ढूंढ रहा है भाई!!

मैं तेरे अंदर छुपा हुआ हूँ
तेरे अंदर ही बसा हुआ हूँ!!

मेरा नहीं है कुछ भी "मोल"
सिक्कों से मुझको न तोल!!

मैं बच्चों की मुस्कानों में हूँ
पत्नी के साथ चाय पीने में
"परिवार" के संग जीने में!!

माँ बाप के आशीर्वाद में
रसोई घर के पकवानों में!!

बच्चों की सफलता में हूँ
माँ की निश्छल ममता में हूँ!!

हर पल तेरे संग रहता हूँ
और अक्सर तुझसे कहता हूँ!!

मैं तो हूँ बस एक "अहसास"
बंद कर दे तू मेरी तलाश!!

जो मिला उसी में कर "संतोष"
आज को जी ले कल की न सोच
कल के लिए आज को न खोना!!

मेरे लिए कभी दुखी न होना
मेरे लिए कभी दुखी न होना!!

अभिषेक
सुपुत्र श्री राम लाल भारती
उप महानिदेशक (एन.जी.एस.)

कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप

संविधान के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी संघ की राजभाषा है और उसके अनुपालन के लिए संविधान में कई व्यवस्थाएँ की गई हैं। इसी व्यवस्था के अंतर्गत अनुच्छेद 351 के अनुसार – संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

सरकारी पत्र–व्यवहार और टिप्पणी लेखन की भाषा सामान्य बोलचाल की भाषा से थोड़ी अलग होती है, फिर भी इस भाषा को यथासंभव जनसामान्य की भाषा के समीप ही रखा जाना चाहिए। कार्यालयीन हिंदी का सम्पूर्ण स्वरूप सरकारी कामकाज की कार्य प्रणाली और उसके पीछे निहित सिद्दान्तों द्वारा निर्धारित होता है।

कार्यालयीन भाषा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. सरल एवं स्पष्ट भाषा – प्रायः यह समझा जाता है कि हिंदी भाषा में टिप्पणी एवं प्रारूप लिखना कठिन है लेकिन कोई भाषा सरल या कठिन नहीं होती। भाषा की जानकारी न होना ही भाषा को कठिन बनाता है क्योंकि भाषा एक नदी की भाँति होती है। उसकी धारा में जो भी आता वह उसी का हो जाता है। अतः दैनिक कार्यों के माध्यम से जितनी अधिक हिंदी भाषा और उसके शब्दों से परिचय होगा वह उतनी ही सहज व सरल लगेगी। प्रारंभ में **प्रदूषण शब्द** किंतु बहुत ही कठिन व अटपटा लगता था किंतु अब प्रदूषण शब्द बहुत ही सहज व सरल लगता है। कार्यालय में प्रयुक्त हिंदी इतनी सरल होनी चाहिए कि दूसरे अधिकारी व कर्मचारी आसानी से समझ सकें। कार्यालयीन हिंदी में द्वि–अर्थी और अटपटे शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। यही वजह है कि कभी–कभी प्रबुद्ध लोग जब फाइल पर अपने पांडित्य का प्रदर्शन करने लगते हैं तो भाषा विस्तार के साथ–साथ मामले की तह तक पहुँचने में और मामले पर शीघ्र कार्रवाई करने में काफी विलंब हो जाता है। उदाहरण के लिए **इसे मंजूरी दे सकते तो ठीक होगा** के स्थान पर **इसे मंजूरी दी जा सकती है** का प्रयोग किया जाना चाहिए।

2. संक्षिप्तता – सरकारी कामकाज की भाषा संक्षिप्त होनी चाहिए। संक्षिप्तता के साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि टिप्पणी व प्रारूप में वे तथ्य छूट न जाएँ जिनका उल्लेख करना आवश्यक है। विचार स्पष्ट करने के लिए विस्तार अधिक हो सकता है परंतु अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए। जैसे – **आपका लंबा, विस्तार भरा पत्र मिला** के स्थान पर **आपका दिनांक....का पत्र सं.....मिला** का प्रयोग होना चाहिए। अतः भाषा निश्चित एवं संक्षिप्त होनी चाहिए।

3. अर्थ की स्पष्टता – कार्यालयीन भाषा का मुख्य कार्य विचारों को बिना लाग–लपेट के संबंधित व्यक्ति तक पहुँचाना होता है। इस रूप में अच्छी भाषा उसी को माना जाएगा जिसका केवल वही अर्थ निकले जो लिखने वाला संप्रेषित करना चाहता है। द्वि–अर्थी या अनेकार्थी होना साहित्यिक भाषा का गुण माना जाता है। कामकाजी हिंदी में यह एक अवगुण होता है।

4. दूसरी भाषाओं के प्रचलित शब्दों का प्रयोग – प्रत्येक जीवंत भाषा में यह क्षमता होती है कि वह दूसरी भाषा के शब्दों को अपने में समाहित करते हुए अपनी भाषा में समृद्धि करे। इसी के अनुरूप मुगलों के शासनकाल में अरबी, फारसी के तथा अंग्रेजों के शासनकाल में अंग्रेजी भाषा के हजारों शब्द हिंदी भाषा में समाहित हो गए। भारत सरकार की नीति है कि अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग में किसी भी प्रकार की हिचक नहीं होनी चाहिए। अंग्रेजी के अनेक शब्द जैसे रजिस्टर, टाइपिस्ट, टिकट, टोकन आदि का बहिष्कार किसी भी दृष्टि से हिंदी की समृद्धि के लिए हितकर नहीं माना जा सकता।

5. वाक्य विन्यास – कामकाजी हिंदी में आवश्यकतानुसार दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपनाया जा सकता है। लेकिन पद रचना तथा वाक्य रचना हिंदी की प्रकृति के अनुकूल ही होनी चाहिए। यद्यपि किसी भी जीवंत भाषा पर दूसरी भाषाओं का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है किन्तु यह प्रभाव उस भाषा के मूल स्वरूप को विकृत न करे, यह ध्यान रखना आवश्यक है। इस दृष्टि से बैंक शब्द का बहुवचन बैंकों होना चाहिए न कि अंग्रेजी के बहुवचन रूप बैंक्स को ही यथावत लिए जाए। इसी क्रम में **चेक** का बहुवचन **चेकों** होगा न कि **चैक्स।**

वाक्य स्तर पर वाक्य–रचना हिंदी की प्रकृति के अनुकूल हो। उदाहरण के लिए **पेड़ से गिरने वाला लड़का आज मर गया** वाक्य अंग्रेजी रूपान्तर The boy who fell from tree, died today के प्रभाव के कारण **वह लड़का, जो पेड़ से गिरा था मर गया** के रूप में प्रयोग किया जाता है जो हिंदी भाषा की प्रकृति अनुकूल नहीं है। इस प्रकार दूसरी भाषा के प्रभाव से बचना चाहिए। हमें अंग्रेजी में सोचकर या लिखकर उसका अनुवाद करने की अपेक्षा मूल लेखन ही हिंदी में करना चाहिए तभी भाषा की स्वाभाविकता बनी रह सकती है।

6. शब्दों की मितव्ययिता – कर्मचारियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपना कामकाज यथा शीघ्र निपटाकर कार्यालयीन प्रक्रिया को गति प्रदान करें। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि कम से कम शब्दों में अपनी बात कही जाए। इसी प्रकार मितव्ययिता को ध्यान में रखते हुए चर्चा करें, निरस्त, स्वीकृत, अनुमोदित, जारी करें आदि का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार पत्राचार में भी आवश्यक्ता से अधिक शब्दों का प्रयोग न केवल श्रम को बल्कि भाषिक सौंदर्य को नष्ट भी करता है साथ ही अर्थ का अनर्थ होने की संभावनाएँ भी बढ़ती हैं। उदाहरण के लिए –

भयंकर सूखा पड़ने से और वर्षा न होने से फसल खराब हो गई के स्थान पर भयंकर सूखे से फसल खराब हो गई का प्रयोग किया जाना चाहिए।

7. एकरूपता – राजभाषा आयोग एवं संसदीय राजभाषा समिति ने भाषा की एकरूपता पर विशेष बल दिया। उनका मत था कि जब तक भाषा में एकरूपता नहीं होगी, तब तक वह कठिन रहेगी तथा देश को एक सूत्र में भी नहीं बाँधा जा सकेगा।

8. सुसंस्कृत/सभ्य भाषा का प्रयोग – कार्यालयीन भाषा सुसंस्कृत, सभ्य एवं शिष्ट होनी चाहिए। पहले किसी के निर्णय यदि गलत साबित हुए हों तो यह न कहा जाए कि – **वह इतना मुर्ख था कि इतना भी उसकी समझ में नहीं आया** के स्थान पर **उस समय इन बातों पर विचार नहीं किया गया** लिखा जाना चाहिए। कार्यालयीन हिंदी में कर्म वाच्य का प्रयोग अधिक किया जाता है।

हर भाषा की अपनी शैली, अभिव्यक्ति की पद्धति होती है। अतः अनुवाद की अपेक्षा चिंतन कार्य करने वाली भाषा का प्रयोग किया जाए, ताकि भाषा में स्वाभविकता बनी रहे।

चूंकि इसमें व्यक्ति की अपेक्षा पदनाम प्रमुख होता है। अतः यहां अधिकारी की ओर से सभी कार्य आदेश, अनुमोदन, सहमति, स्वीकृति व अनुदेश के आधार पर किए जाते हैं। इसलिए इसमें आदेशात्मक, सुझावात्मक, कथनात्मक वाक्यों का प्रयोग किया जाता है।

आदेशात्मक वाक्य – जिनमें कर्ता वाक्य संरचना में निहित है

1. मिसिल पर प्रस्तुत करें।

2. चर्चा के अनुसार मसौदा पुनः प्रस्तुत करें।

3. मंत्रालय का अनुमोदन प्राप्त करें।

कर्म वाच्य प्रधान आदेशात्मक वाक्य।

1. मिसिल पर प्रस्तुत किया जाए।

2. चर्चा के अनुसार मसौदा पुनः प्रस्तुत किया जाए।

3. मंत्रालय का अनुमोदन प्राप्त किया जाए।

इसी के अंतर्गत–

1. मिसिल के लौटने पर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

2. मुख्यालय छोड़ने की अनुमति दी जाती है।

कर्ता का लोप–

1. सूचित किया जाता है कि .....

2. शिकायत मिली है कि .....

3. ऐसा पाया गया कि .....

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि कार्यालयीन हिंदी की वाक्य संरचना सामान्य हिंदी की वाक्य संरचना के अंदर रहकर भी चयन के सिद्धांत पर आधारित है। कार्यालयीन हिंदी में कर्म वाच्य की प्रधानता है, जो इसकी प्रकृति के अनुसार स्वाभाविक ही है।

संकलन कर्ता
अमर दीप
कनिष्ठ अनुवादक (एन.जी.एस.)

माँ बाप को भूलना नहीं

भूलो सभी को मगर
माँ–बाप को भूलना नहीं
उपहार अनगिनत हैं उनके
इस बात को भूलना नहीं।।

पत्थर पूजे कई तुम्हारे,
जन्म के खातिर अरे।
पत्थर बन माँ–बाप का
दिल कभी कुचलना नहीं।।

मुख का निवाला दे अरे,
जिसने तुम्हें बड़ा किया।
अमृत पिलाया तुमको,
जहर उनके लिए उगलना नहीं।।

कितने लड़ाये लाड़
सब अरमान भी पूरे किये।
पूरे करो अरमान उनके
बात यह भूलना नहीं।।

लाखों कमाते हो भले
माँ–बाप से ज्यादा नहीं।
सेवा बिना सब राख है,
मद में कभी भूलना नहीं।।

संतान से सेवा चाहो,
संतान बन सेवा करो।
जैसे करनी वैसी भरनी
न्याय यह भूलना नहीं।।

सोकर स्वयं गीले में
सुलाया तुम्हें सुखी जगह।
माँ की अभीमय आखों को
भूलकर कभी भिगोना नहीं।।

धन जो मिल जाएगा
मगर माँ–बाप क्या मिल पाएँगे।
पल–पल पावन उन चरणों की
चाह कभी भूलना नहीं।।

अनसार
एम.टी.एस.
(अनुबंधित)

जो धेनु आयी ना होती

धरा धाम में धेनु आयी न होती।
तो उन्नति कृषि की बढ़ाई न होती।।

फिरा करते पैदल तुम कैलासवासी।
सवारी जो नन्दी की पायी न होती।।

चराते ना फिरते दिलीप नन्दिनी को।
तो रघुकुल की फिरती दुहाई न होती।।

चरण पूजने को न पाते जनक जी।
जो हल बैल से सीता आई न होती।।

बजाते क्यों मुरली मधुबन में आके।
जो मुरारी ने गैया चराई न होती।।

धरा–सी रसातल में जलमग्न होती।
जो गैया इनको सींगों पे उठाई न होती।।

भव सिंधु से न होता तारण–तरण 'पारान'
जो गोदान की रीति आयी न होती।।

उषा अग्रवाल
दूरभाष सुपरवाइजर
(वित्त अनुभाग)

साया

न कोइ आहट न कोई साया है
न जाने दिल में कौन आया है।

जिस की चर्चा गली गली में है
मेरी नस नस में वो समाया है।

जो दिया जल उठा था सीने में
अश्के गम से उसे बुझाया है।

खो गए रास्ते धुंधलकों में
जबसे हमने कदम उठाया है।

उड़ने लगती है फूल से शबनम
धूप का जिस चमन में साया है।

ये तो पत्थरों का देश है 'शशि'
हमने तेरा बुत कहां बनाया है।

सतविंदर सिंह
एम.टी.एस.
(अनुबंधित)

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र, नई दिल्ली में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र,नई दिल्ली में दिनांक 14 सितंबर, 2018 से 03 अक्तूबर, 2018 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ 14.09.2018 को प्रातः 11:00 बजे श्री महाबीर प्रसाद सिंघल, वरिष्ठ उप महानिदेशक, टी.ई.सी. द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया । इस अवसर पर सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को श्री महाबीर प्रसाद सिंघल द्वारा माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह का संदेश पढ़कर सुनाया। गया। पखवाड़े के दौरान कुल 10 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 03–10–2018 को श्री महाबीर प्रसाद सिंघल, वरिष्ठ उप महानिदेशक, टी.ई.सी.की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सभी विजेताओं को पुरस्कार राशि एवं प्रशस्ति पत्र दिये गए । इस मौके पर उन्होंने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में अधिक से अधिक कामकाज और पत्राचार करने का आह्वान किया । अंत में श्री राम लाल भारती, उप महानिदेशक (एन.जी.एस.) द्वारा सभी को धन्यवाद देते हुए पखवाड़े का समापन किया गया ।

क्र. सं.	प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार विजेता का नाम	प्राप्त स्थान
1	श्रुतलेख	श्री राम संवार	प्रथम स्थान
2		श्री चितरंजन कुमार	द्वितीय पुरस्कार
3		श्री रामजी प्रसाद	तीसरा पुरस्कार
4		श्री ईश्वर सिंह	सांत्वना पुरस्कार
5		श्री नागेंद्र लाल कर्ण	सांत्वना पुरस्कार
6		श्री के. रमन	सांत्वना पुरस्कार
7	निबंध (राजपत्रित अधिकारियों के लिए)	श्री विमल कुमार सिंह	प्रथम पुरस्कार
8		श्री अवधेश सिंह	द्वितीय पुरस्कार
9		श्री मनीष रंजन	तीसरा पुरस्कार
10		सुश्री नम्रता सिंह	सांत्वना पुरस्कार
11		श्री अंशुल कुमार गुप्ता	सांत्वना पुरस्कार
12		श्री राजेश त्रिपाठी	सांत्वना पुरस्कार

13	निबंध (अराजपत्रित कर्मचारियों के लिये)	श्री शिव चरण	प्रथम पुरस्कार
14		श्री अमर दीप	द्वितीय पुरस्कार
15		श्री निर्भय कुमार मिश्रा	तीसरा पुरस्कार
16		श्रीमती उषा अग्रवाल	सांत्वना पुरस्कार
17		श्री चितरंजन कुमार	सांत्वना पुरस्कार
18		श्री नागेंद्र लाल कर्ण	सांत्वना पुरस्कार
19		श्री ईश्वर सिंह	सांत्वना पुरस्कार
20	हिंदी टिप्पण/मसौदा लेखन	श्री अमर दीप	प्रथम पुरस्कार
21		श्री राजेश त्रिपाठी	द्वितीय पुरस्कार
22		श्री मनीष रंजन	तीसरा पुरस्कार
23		श्री अवधेश सिंह	सांत्वना पुरस्कार
24		श्री रोहित गुप्ता	सांत्वना पुरस्कार
25		श्रीमती सुषमा चोपड़ा	सांत्वना पुरस्कार
26	हिंदी व्याकरण ज्ञान	सुश्री नम्रता सिंह	प्रथम पुरस्कार
27		श्री रोहित गुप्ता	द्वितीय पुरस्कार
28		श्री मनीष कुमार सिंह	तीसरा पुरस्कार
29		श्री अंशुल कुमार गुप्ता	सांत्वना पुरस्कार
30		श्री अवधेश सिंह	सांत्वना पुरस्कार
31		श्रीमती नीति सिंह	सांत्वना पुरस्कार
32	अनुवाद	श्री हर्ष शर्मा	प्रथम पुरस्कार
33		श्री मनीष कुमार सिंह	द्वितीय पुरस्कार
34		श्री अंशुल कुमार गुप्ता	तीसरा पुरस्कार
35		श्री रोहित गुप्ता	सांत्वना पुरस्कार
36		सुश्री नम्रता सिंह	सांत्वना पुरस्कार
37		श्री मनीष रंजन	सांत्वना पुरस्कार
38	अंताक्षरी	श्री शिव चरण	प्रथम पुरस्कार
39		श्रीमती उषा अग्रवाल	द्वितीय पुरस्कार

40		श्री राजेश त्रिपाठी	तीसरा पुरस्कार
41		श्री चितरंजन कुमार	सांत्वना पुरस्कार
42		श्री हर्ष शर्मा	सांत्वना पुरस्कार
43		श्री मनीष रंजन	सांत्वना पुरस्कार
44	हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए	श्री किशन पाल सिंह	प्रथम पुरस्कार
45		श्रीमती सुषमा चोपड़ा	द्वितीय पुरस्कार
46		श्रीमती नूपुर शर्मा	तीसरा पुरस्कार
47		श्री श्रीकृष्ण सिंह	सांत्वना पुरस्कार
48		श्री रोहित गुप्ता	सांत्वना पुरस्कार
49	स्वरचित मौलिक कविता लेखन	श्री निर्भय कुमार मिश्रा	प्रथम पुरस्कार
50		श्री मनीष रंजन	द्वितीय पुरस्कार
51		श्री चितरंजन कुमार	तीसरा पुरस्कार
52		श्रीमती उषा अग्रवाल	सांत्वना पुरस्कार
53		श्री विमल कुमार सिंह	सांत्वना पुरस्कार
54		श्री नागेंद्र लाल कर्ण	सांत्वना पुरस्कार

बधाईयां

हिंदी पखवाड़ा 2018

बधाईयां

हिंदी पखवाड़ा 2018

बधाईयां

हिंदी पखवाड़ा 2018

एक झलक

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएं

एक झलक

हिंदी कार्यशालाएं

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 15 जून, 2018 को दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र का वर्ष 2017–18 में हिंदी में किए गये कार्यों का निरीक्षण किया गया। दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र के अलावा 03 अन्य कार्यालयों, भारतीय खादय निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली, केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, मेरठ और इंडियन रेलवे कैटरिंग एण्ड टूरिज्म कारपोरेशन, नई दिल्ली का निरीक्षण भी 15 जून 2018 को किया गया। उक्त बैठक में दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र की तरफ से श्री महाबीर प्रसाद सिंघल, वरिष्ठ महानिदेशक, श्री राम लाल भारती, उप महानिदेशक (एन.जी.एस.) और श्रीमती नीलम सिंघल, उप महनिदेशक (पी एण्ड टी) ने भाग लिया तथा दूरसंचार विभाग का प्रतिनिधित्व श्री संजीव गुप्ता, उप महानिदेशक (परियोजना प्रबंधन) और श्री पी. सी. विश्वकर्मा, सयुंक्त निदेशक (राजभाषा) ने किया। निरीक्षण बैठक माननीय डॉ. सत्यनारायण जटिया जी, उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

निरीक्षण बैठक की कुछ झलकियाँ

एम २ एम/आई ओ टी एनैबलिंग स्मार्ट इंफ्रास्ट्रक्चर पर एक संगोष्ठी का आयोजन

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र, नई दिल्ली में दिनांक 08 जनवरी, 2019 को "एम 2 एम (मशीन से मशीन) / आई ओ टी (इन्टरनेट ऑफ थिंग्स) एनैबलिंग स्मार्ट इंफ्रास्ट्रक्चर" पर एक संगोष्ठी का शुभारंभ माननीय संचार राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा के कर कमलों द्वारा किया गया। श्रीमती अरूणा सुंदरराजन, सचिव, दूरसंचार विभाग, श्री रवि कान्त, सदस्य (सेवाएं), श्री डी. मन्ना, डीजी दूरसंचार और दूरसंचार विभाग, यूएसओएफ, ट्राई, टीडीएसएटी, सीडॉट, एमटीएनएल, बीएसएनएल, बीबीएनएल, टीएसडीएसआई, उदयोग, शैक्षिक क्षेत्र के गणमान्य पदाधिकारी संगोष्ठी में मौजूद रहे।

इस संगोष्टी के उदघाटन के अवसर पर माननीय संचार राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा द्वारा टीईसी की दो तकनीकी रिपोर्ट "आईओटी / आईसीटी के प्रयोग से स्मार्ट शहरों का डिजाइन एवं समरेखण" और "आईओटी / एम2एम सुरक्षा हेतु संस्तुति" जारी की गयी। ये रिपोर्टें हितधारकों जैसे योजनाकारों, नीति निर्माताओं, उत्पादकों एवं शैक्षिक क्षेत्र इत्यादि के लिए लाभदायक सिद्ध होगी तथा मार्गदर्शक के रूप में भूमिका निभाएंगी।

अनिवार्य जांच (मैन्डेटरी टेस्टिंग)

अनिवार्य जांच (मैन्डेटरी टेस्टिंग) के बारे में हितधारकों में जागरूकता हेतु विभिन्न स्थानों पर कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। मूख्य रूप से इन कार्यशालाओं में दूरसंचार टेस्टिंग प्रयोगशालाओं, उपकरण आपूर्तिकर्ताओं, मूल उपकरण निर्माताओं तथा अन्य हितधारकों ने भाग लिया।

कार्यशालाओं की झलकियां

दूरसंचार विभाग की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक

दूरसंचार विभाग, संचार मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 29 मई, 2018 को रायपुर (छत्तीसगढ़) में माननीय संचार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री मनोज सिन्हा जी की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में दूरसंचार विभाग और इसके नियंत्रणाधीन उपक्रमों/ संगठनों/ कार्यालयों के प्रमुख तथा अन्य उच्चाधिकारी आदि शामिल हुए। बैठक में दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र का प्रतिनिधित्व श्री महाबीर प्रसाद सिंघल, वरिष्ठ उप महानिदेशक द्वारा किया गया। माननीय अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में यथासंभव सरल, सुबोध एवं आम बोलचाल की भाषा हिंदी के प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया। बैठक में सयुंक्त सचिव (प्रशासन) एवं सदस्य–सचिव ने दूरसंचार विभाग में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की दिशा में किए जा रहे विभिन्न प्रयासों के बारे में सभी सदस्यों को अवगत कराया। विशेष सचिव ने संबोधित करते हुए कहा कि हाल ही के वर्षों में हमारा देश विश्व के सबसे तेजी से विकास कर रहे दूरसंचार बाजार के रूप में उभरा है और हिंदी अपनी सरलता एवं लोकप्रियता के कारण विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर है।

बैठक की कुछ झलकियां

राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान अल्ट परिसर, गाजियाबाद

संस्थान की गतिविधियां

1. प्रशिक्षणः संस्थान द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं:

क. आईटीएस बैच – 2016 के प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम।

ख. पी एंड टी भवन निर्माण सेवा (बीडबल्यूएस–सिविल और इलैक्ट्रिकल) बैच–2016 और (बीडबल्यूएस–सिविल) बैच–2017 प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम।

ग. कनिष्ठ दूरसंचार अधिकारियों (जेटीओ)– 2016 (आरक्षित सूची) बैच के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम।

घ. दूरसंचार विभाग के अधिकारियों के लिए दूरसंचार एवं आईसीटी से जुड़े विषयों जैसे नैक्सट जेनरेशन नेटवर्क, साइबर और टेलिकॉम नेटवर्क सिक्योरिटी, आपदा प्रबंधन में दूरसंचार की भूमिका, टेलिकॉम लाइसेंस देना, ग्रे मार्केट कम्पलेंट इन्वेस्टिगेशन, विधुत चुम्बकीय विकिरण, लॉ फुल इन्टर्सेप्शन एवं मोनिट्रिंग सिस्टम, एडवांस ट्रांसमिशन सिस्टम आदि पर सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम।

ङ. विदेश मंत्रालय के तत्वावधान में, दूरसंचार और आईसीटी प्रौद्योगिकियों नीतियों पर विदेशी प्रतिभागियों के लिए आई.टी.ई.सी. प्रशिक्षण कार्यक्रम।

2. आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमः संस्थान द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया:

क्र. स.	पाठ्यक्रम का प्रकार	आयोजित पाठ्यक्रमों की संख्या	प्रशिक्षुओं की संख्या	प्रशिक्षु दिवसों की संख्या
1.	आईटीएस प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम	19	15 (2014 बैच) + 34 (2015) + 34(2016)	11389
2.	बीडबल्यूएस प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम	11	1 (बीडबल्यूएस–2013) + 1 (बीडबल्यूएस–2015) + 3(बीडबल्यूएस–2016) + 2(बीडबल्यूएस–2017)	1190
3.	कनिष्ठ दूरसंचार अधिकारियों (जेटीओ) के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम	6	2 (2016 बैच) + 2 (2016 आरक्षित सूची बैच)	239
4.	दूरसंचार विभाग एवं अन्य केन्द्र सरकार के विभागों के अधिकारियों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम	11	190	294
5.	विदेशी प्रतिभागियों के लिए भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) प्रशिक्षण कार्यक्रम	1	11	99
	कुल संख्या	**48**	**295**	**13211**

3. भारतीय दूरसंचार सेवा (आईटीएस) एवं पी एण्ड टी भवन निर्माण सेवा (पी एण्ड टी – बीडब्ल्यूएस) के प्रशिक्षु अधिकारियों की माननीय राष्ट्रपति से मुलाकात

भारतीय दूरसंचार सेवा– 2016 बैच एवं पी&टी भवन निर्माण सेवा –2016 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों ने 'राष्ट्रपति भवन' में भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री राम नाथ कोविंद से दिनांक 11 जुलाई, 2018 को मुलाकात की। इस अवसर पर माननीय राष्ट्रपति ने प्रशिक्षु अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि उनकी सेवाएं उन्हें "राष्ट्र की सेवा के लिए एक विशाल मंच" प्रदान करती हैं। माननीय राष्ट्रपति ने कहा, प्रशिक्षु विभिन्न कार्यक्षेत्रों में महत्वपूर्ण परियोजनाओं के प्रबंधन और दूरसंचार जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों की सेवा के लिए उत्तरदायी होंगे। उन्होंने कहा, "कुछ नौकरियों में ही ऐसे कार्यालय में काम करने का मौका मिलता है जहां वे जो सब कुछ करते हैं, वो राष्ट्र सेवा का कार्य हो सकता है"। माननीय राष्ट्रपति महोदय ने बताया कि दूरसंचार क्षेत्र ने विशेष रूप से वायरलेस सेगमेंट में तेजी से विकास किया है और आज बिजली, सड़क और पानी की तरह बुनियादी ढांचे के रूप में माना जाता है। उन्होंनें कहा, "यह क्षेत्र तीव्र आर्थिक प्रगति और सामाजिक–आर्थिक विकास प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है"। इसलिए उन्होंने कहा, भारतीय दूरसंचार सेवा के अधिकारियों की एक महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि हम विशेष रूप से हमारे ग्रामीण और दूरदराज के असंबद्द क्षेत्रों को जोड़ना चाहते हैं। इसलिए भारतीय दूरसंचार सेवा के अधिकारियों की यह जिम्मेदारी है कि हम यह सुनिश्चित करें कि हमारे पास एक सक्षम नीति प्रतिमान और प्रवाहकीय लाइसेंसिंग एवं विनियामक ढांचा हो। माननीय राष्ट्रपति ने कहा, पी एण्ड टी बिल्डिंग वर्क्स सर्विस के अधिकारियों का काम भी उतना ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्हें दूरसंचार विभाग और डाक विभाग के कार्यालयों और आवासीय परिसरों, बिजली और वास्तुशिल्प कार्यों के निर्माण और रखरखाव में गुणवत्ता और दक्षता सुनिश्चित करना है। सुश्री अरूणा सुंदरराजन, सचिव एवं अध्यक्ष दूरसंचार आयोग; श्री दीपक सिन्हा, सदस्य (सेवाएं); श्री डी. मन्ना, सलाहकार (एनटीआईपीआरआईटी); श्री राजेश शर्मा, उप महानिदेशक (प्रशिक्षण) दूरसंचार विभाग; श्री एच एस जाखड़, उप महानिदेशक (प्रशिक्षण) एनटीआईपीआरआईटी ; श्री सुभाष चंद, निदेशक (प्रशिक्षण) एनटीआईपीआरआईटी ; श्री विवेक श्रीवास्तव, निदेशक (प्रशिक्षण), दूरसंचार विभाग ; श्री मनोरंजन, सहायक महानिदेशक (प्रशिक्षण) एनटीआईपीआरआईटी ; श्री विवेक कृष्ण वर्मा, सहायक निदेशक (प्रशिक्षण) एनटीआईपीआरआईटी विचार–विमर्श कार्यक्रम के दौरान उपस्थित थे।

माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद और अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण के साथ भारतीय दूरसंचार सेवा – 2016 बैच एवं पी&टी बीडबल्यूएस – 2016 बैच के प्रशिक्षु अधिकारी

4. एनटीआईपीआरआईटी में आयोजित सेवा–पाठ्यक्रम और अन्य कार्यक्रम

दूरसंचार विभाग और अन्य केंद्र सरकार के विभागों के सेवारत अधिकारियों के लिए राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान, गाजियाबाद में विभिन्न विषयों पर ग्यारह इन–सर्विस पाठ्यक्रम संचालित किए गए हैं।

दूरसंचार विभाग और अन्य केंद्र सरकार के अधिकारियों के लिए साइबर और दूरसंचार नेटवर्क सुरक्षा पर इन–सर्विस कोर्स के दौरान उपस्थित अधिकारीगण

सहभागिता सत्र के दौरान, आईटीएस–2016 बैच के अधिकारियों के साथ सदस्य (प्रौद्योगिकी), दूरसंचार विभाग

ट्रांसमिशन प्रौद्योगिकी पर इन–सर्विस कोर्स के दौरान उपस्थित दूरसंचार विभाग के अधिकारीगण

5. जेटीओ – 2016 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए विदाई कार्यक्रम का आयोजनः

जेटीओ–2016 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों के इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम की समाप्ति पर संस्थान में एक विदाई कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री डी. मन्ना, सलाहकार (एनटीआईपीआरआईटी) ने दिनांक 20–06–2018 को विदाई भाषण में प्रशिक्षु अधिकारियों को निष्ठा से कार्य करने और सौंपे गये सभी कार्यों को उत्कृष्टता से करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने प्रशिक्षु अधिकारियों को दूरसंचार क्षेत्र में हो रहे नवीनतम प्रौद्योगिकियों के बदलाओं के प्रति जागरूक रहने की सलाह दी क्योंकि यह उन्हें अपने कर्तव्यों का कुशलता से निर्वहन करने में सक्षम बनाएगा।

एनटीआईपीआरआईटी के अधिकारियों के साथ जेटीओ– 2016 बैच के प्रशिक्षु अधिकारी

6. आईटीएस–2016 बैच और पी&टी भवन निर्माण सेवा (सिविल & इलैक्ट्रिकल) – 2016 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों द्वारा अध्ययन यात्रा : भारत में संचार सुविधाओं का अध्ययन करने के लिए आईटीएस–2016 बैच और पी&टी भवन निर्माण सेवा (सिविल & इलैक्ट्रिकल) 2016 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों ने दो सप्ताह की अध्ययन यात्रा की। उनके द्वारा की गई यात्रा का विवरण निम्न प्रकार है:

(क) मैसर्स क्वालकॉम हैदराबाद, आईटीपीसी, आईआईटी, हैदराबाद और दूरसंचार विभाग की एलएसए की सुरक्षा शाखा, हैदराबाद।

(ख) मैसर्स हुवावे बंगलूरू, बीएसएनएल एनओसी और कर्नाटक एलएसए बंगलूरू।

(ग) मैसर्स एयरसेल, मैसर्स रिलायंस जियो, मैसर्स टाटा कम्यूनिकेशंस लिमिटेड मुंबई और मुंबई एलएसए।

(घ) आईआईएम, अहमदाबाद में स्थित टेलीकाम सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (टीसीओई) और स्पेस एप्लीकेशन सेंटर (एसएसी) अहमदाबाद ।

अध्ययन यात्रा के दौरान प्रशिक्षु अधिकारियों को दूरसंचार की रूपरचना की कार्यप्रणाली के बारे में जानने और दूरसंचार क्षेत्र के पारिस्थितिक तंत्र को समझने का अवसर मिला।

मैसर्स हुवावे, बंगलुरू में आइटीएस–2016 बैच और पी & टी बीडबल्यूएस–2016 बैच के प्रशिक्षु अधिकारी

7. भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के तत्वावधान में विदेशी प्रतिभागियों के लिए भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आई.टी.ई.सी.), प्रशिक्षण कार्यक्रम :

इस संस्थान द्वारा दिनांक 21–01–2019 से 01–02–2019 तक केन्द्रीय गुप्तचर प्रशिक्षण संस्थान (सीडीटीआई), गाजियाबाद में विदेशी प्रतिभागियों के लिए दूरसंचार लाइसेंसिंग और विनियमों पर एक आई.टी.ई.सी. प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कुल 7 देशों– अफगानिस्तान, होंडुरस, मॉरिशस, नाइजीरिया, मोज़ाम्बिक, फिलिस्तीन और दक्षिण सूडान के 11 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

दूरसंचार लाइसेंसिंग और विनियमों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का उदघाटन करते हुए वरिष्ठ उप महानिदेशक, एनटीआईपीआरआईटी

सहभागिता सत्र के दौरान आई.टी.ई.सी. पाठ्यक्रम के प्रतिभागी

आई.टी.ई.सी. ट्रेनिंग कोर्स में विदेशी प्रतिभागियों के साथ संस्थान के अधिकारी

8. हिंदी पखवाड़ा एवं कार्यशाला : संस्थान में दिनांक 14 सितंबर, 2018 से 01 अक्तूबर, 2018 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित अंताक्षरी प्रतियोगिता
की एक झलक

हिन्दी पखवाड़ा 2018

समापन

दूरसंचार विभाग

दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र

खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली–110001
वेबसाईट : www.tec.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालयः

पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता

प्रथम तल, दूरसंचार क्यूए बिल्डिंग, ईपी एण्ड जीपी ब्लॉक,
सॉल्ट लेक, सेक्टर 5, कोलकाता–700091

पश्चिमी क्षेत्र, मुम्बई

द्वितीय तल, डी विंग, बीएसएनएल प्रशासनिक भवन,
जुहू रोड, शान्ता क्रूज (वेस्ट) मुम्बई–400054

दक्षिणी क्षेत्र, बेंगलुरू

द्वितीय मंजिल, जया नगर टेलीफोन एक्सचेंज,
9 वां मेन, चौथा ब्लॉक, जयानगर, बेंगलुरू–560011

उत्तरी क्षेत्र, नई दिल्ली

गेट नं. 5, खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली–110001